

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 जयपुर, प्रकाशन सोमवार, 3 नवम्बर 2025 वर्ष-26 अंक-6 मूल्य-12/- कुल पृष्ठ-12 www.krishakjagat.org पृष्ठ-1

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान 'सहकार से समृद्धि' की संकल्पना को साकार करने में देश के अग्रणी राज्यों में शुमार है। राज्य में सहकारिता का नेटवर्क जमीनी स्तर तक मजबूत कर आमजन को अधिक से अधिक संख्या में लाभान्वित करने के निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में अक्टूबर माह में आयोजित किया गया 'सहकार सदस्यता अभियान' राज्य में सहकार आंदोलन को नई ऊंचाइयां देने की दिशा में अहम कड़ी साबित हुआ है। अभियान के अंतर्गत लगभग 8,500 पैक्स के स्तर पर शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस दौरान प्रमुख रूप से 5 प्रकार की गतिविधियां आयोजित कर उनमें आशानुरूप परिणाम प्राप्त किये गए। युवाओं एवं महिलाओं को अधिक से अधिक संख्या में सहकारिता से जोड़ना अभियान के अंतर्गत सबसे प्रमुख गतिविधि थी। इस दिशा में बेहतरीन कार्य करते हुए अभियान की अवधि में सहकारी समितियों के 8.90 लाख से अधिक नए सदस्य बनाए गए। यह निर्धारित लक्ष्य 7.34 लाख की तुलना में लगभग 21.25 प्रतिशत अधिक है।

जयपुर संभाग में 1.25 लाख नये सदस्य बनाये जाने का लक्ष्य था, जिसकी तुलना में 2.03 लाख सदस्य बनाये गए। उदयपुर संभाग में 1.01 लाख सदस्यों के निर्धारित लक्ष्य की तुलना में 1.30 लाख नये सदस्य बनाये गए। अजमेर संभाग में 1.15 लाख सदस्यों के निर्धारित लक्ष्य के मुकाबले 1.22 लाख नये सदस्य बनाये गए। जबकि, बीकानेर संभाग में 99 हजार के लक्ष्य की तुलना में 1.19 लाख सदस्य बनाये गए। इसी प्रकार, कोटा संभाग में 53 हजार के लक्ष्य की तुलना में लगभग 68 हजार एवं भरतपुर संभाग में 74 हजार के लक्ष्य के

‘सहकार से समृद्धि’ की संकल्पना को साकार कर रही राज्य सरकार



- 'सहकार सदस्यता अभियान' से राज्य में मजबूत हुआ सहकारिता का नेटवर्क
- 7.34 लाख के निर्धारित लक्ष्य की तुलना में 8.90 लाख से अधिक नए सदस्य बनाये गए
- 1706 ग्राम पंचायतों में पैक्स गठन के लिए सर्वे की कार्यवाही पूर्ण
- 1342 सहकारी समितियों में गोदाम निर्माण के लिए हुआ भूमि का चिन्हीकरण

मुकाबले लगभग 95 हजार नये सदस्य बनाये गए। जोधपुर संभाग में 1.53 लाख नये सदस्य बनाये गए।

अभियान अवधि के दौरान पैक्सविहीन ग्राम पंचायतों में नवीन पैक्स गठन की कार्यवाही के तहत 1,706 ग्राम पंचायतों में सर्वे की कार्यवाही पूर्ण की गई। इस दौरान 1,296 पैक्स हेतु जिला स्तरीय कमेटी की बैठक आयोजित की गई। जबकि, 1275 पैक्स के गठन हेतु प्रस्ताव विभाग को प्राप्त हुए। इस दौरान भूमिविहीन या अपर्याप्त भूमि वाली 1,342 सहकारी समितियों में गोदाम निर्माण हेतु भूमि का चिन्हीकरण किया गया तथा 1,215 सहकारी समितियों द्वारा भूमि आवंटन के लिए आवेदन किया गया।

'सहकार सदस्यता अभियान' के अंतर्गत पीएम किसान सम्मान निधि योजना के लम्बित आवेदनों में से 38 हजार 850 कृषकों की आधार सीडिंग व 27 हजार 640 कृषकों की ई-केवाईसी का कार्य

भी पूर्ण किया गया। साथ ही, इस दौरान 11 लाख से अधिक लोगों को प्रस्तावित नवीन सहकारी

कानून के प्रमुख प्रावधानों की जानकारी प्रदान गई। 'सहकार सदस्यता अभियान' के अंतर्गत बड़ी संख्या में युवाओं एवं महिलाओं के सहकारी समितियों से जुड़ने से राज्य में जमीनी स्तर पर सहकारिता का नेटवर्क और अधिक मजबूत हुआ है, जिससे अधिक लोगों तक सुचारू रूप से जनकल्याणकारी योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित होगी। पैक्सविहीन ग्राम पंचायतों में नवीन पैक्स के गठन से जमीनी स्तर पर सहकारिता का व्यापक नेटवर्क होगा, जिसका किसानों व ग्रामीणों को प्रत्यक्ष रूप से लाभ मिलेगा। भूमिविहीन समितियों को भूमि आवंटन हो जाने से इन समितियों में गोदाम के निर्माण की राह प्रशस्त होगी, जिससे राज्य की भण्डारण क्षमता में आशातीत वृद्धि होगी। आधार सीडिंग और ई-केवाईसी का कार्य पूर्ण होने से किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि योजना सुचारू रूप से लाभ मिल पाएगा।

रबी में उर्वरकों पर मिलेगी 38 हजार करोड़ की सब्सिडी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने रबी सीजन 2025-26 (1 अक्टूबर 2025 से 31 मार्च 2026 तक) के लिए फॉस्फेटिक और पोटाशिक

केन्द्रीय कैबिनेट का फैसला

उर्वरकों पर पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरें तय करने के उर्वरक विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। रबी सीजन 2025-26 के लिए अनुमानित बजटीय आवश्यकता लगभग 37,952.29 करोड़ रुपए होगी। यह खरीफ सीजन 2025 की बजटीय आवश्यकता से लगभग 736 करोड़ रुपए अधिक

डाई अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) और एनपीकेएस (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर) ग्रेड सहित पीएंडके उर्वरकों पर सब्सिडी रबी 2025-26 के लिए अनुमोदित दरों के आधार पर प्रदान की जाएगी ताकि किसानों को सस्ती कीमतों पर उर्वरकों की सुचारू उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

किसानों को लाभ : ● किसानों को सब्सिडीयुक्त, किफायती और उचित मूल्य पर खाद मिलेगी।

कृषक जगत न्यूज वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें



अंदर पढ़िये...



कृषि उत्पादन में प्रोम खाद की उपयोगिता

स्टिल उपकरण, लाए परिवर्तन

STIHL

खेत तैयार, फसल शानदार!



पावर वीडर
MH 710



Call or Whatsapp
9028411222

www.stihl.in
German Quality and Innovation

मध्य प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र में होगी 15095 करोड़ की दलहन-तिलहन खरीदी

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने खरीफ 2025-26 के लिए दी मंजूरी



नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने खरीफ सीजन 2025-26 के लिए तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश में दालों एवं तिलहनों की खरीदी योजनाओं को मंजूरी दी है। इन राज्यों के लिए स्वीकृत कुल खरीद राशि रु. 15095.83 करोड़ है, जिससे संबंधित राज्यों के लाखों किसानों को व्यापक लाभ मिलेगा। इन राज्यों के कृषि मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय वचुअल बैठक में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान सहित कृषि की योजनाओं के तहत ये स्वीकृतियां प्रदान कीं।

बैठक में चर्चा के बाद केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मध्य प्रदेश में खरीफ 2025-26 के दौरान सोयाबीन की 22,21,632 मीट्रिक टन की मूल्य अंतर भुगतान योजना के तहत लागू होगी, जिसके लिए रु. 1,775.53 करोड़ के वित्तीय प्रभाव की स्वीकृति केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने दी।

तेलंगाना में मूंग की कुल 4,430 मीट्रिक टन खरीद मूल्य समर्थन योजना के तहत रु. 38.44 करोड़ की स्वीकृति दी। उड़द की शत-प्रतिशत खरीद होगी, वहीं सोयाबीन की 25 प्रतिशत खरीद की स्वीकृति दी गई है। इसी प्रकार, ओडिशा राज्य में अरहर की 18,470 मीट्रिक टन (राज्य उत्पादन का 100%) खरीद को PSS के तहत रु. 147.76 करोड़ के बजट के साथ मंजूरी दी है।

महाराष्ट्र में केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने मूंग की 33,000 मीट्रिक टन, उड़द की 3,25,680

मीट्रिक टन और सोयाबीन की 18,50,700 मीट्रिक टन कुल मात्रा को PSS के अंतर्गत क्रमशः रु. 89.34 करोड़, रु. 2540.30 करोड़ और रु. 9,860.53 करोड़ की कुल लागत पर मंजूरी दी है।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि ये मंजूरियां इसलिए दी गई हैं ताकि किसानों को उनकी फसल पर बेहतर लाभ मिल सके।

कृषि क्षेत्र में प्रगति की समीक्षा

केंद्रीय कृषि मंत्री ने प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट द्वारा खाद सब्सिडी के लिए 38 हजार करोड़ रुपये जारी करने के फैसले पर किसानों की ओर से आभार व्यक्त किया। श्री चौहान की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में बताया गया कि खरीफ-2025 के दौरान फसलों की बुवाई काफी अच्छी हुई है। खरीफ-2025 के लिए धान की बुवाई का कुल आंकड़ा 441.58 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की अपेक्षा

छोटे किसानों तक पहुंचे अच्छी क्वालिटी के बीज

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने, नई दिल्ली में राष्ट्रीय बीज निगम (NSC) के नव-स्थापित अत्याधुनिक सब्जी एवं पुष्प बीज प्रसंस्करण संयंत्र और पैकिंग इकाई का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने बरेली, धारवाड़, हसन, सूरतगढ़ और रायचूर स्थित एनएससी के पांच बीज प्रसंस्करण संयंत्रों का वचुअल उद्घाटन भी किया।



पूसा, नई दिल्ली स्थित बीज भवन में स्थापित सब्जी बीज प्रसंस्करण संयंत्र की क्षमता 1 टन प्रति घंटा है, जबकि एनएससी के अन्य पांचों संयंत्रों की क्षमता 4 टन प्रति घंटा रखी गई है। ये संयंत्र अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित हैं, जिससे किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित होगी और बीज उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी, NSC की CMD और मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव मनिंदर कौर द्विवेदी, संयुक्त सचिव श्री अजीत कुमार साहू सहित NSC तथा कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

अधिक है। वहीं, तिलहनी फसलों का अखिल भारतीय क्षेत्र 190.13 लाख हेक्टेयर तक दर्ज किया गया, जिसमें सोयाबीन एवं मूंगफली प्रमुख हैं। इसी तरह, दालों का क्षेत्र 120.41 लाख हेक्टेयर तक पहुंचा है, जो पोषण सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है, वहीं गन्ने का क्षेत्र 59.07 लाख हेक्टेयर तक रहा है, जिससे गन्ना उत्पादक किसानों को सीधा फायदा होगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि आगामी रबी

मौसम में दलहनी और तिलहनी फसलों की ज्यादा बुवाई के लिए और रिकॉर्ड उत्पादकता प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार, प्रदेशों के साथ मिलकर हरसंभव सहायता किसानों को उपलब्ध कराएगी।

बैठक में कृषि आयुक्त डॉ. पी.के. सिंह ने केंद्रीय कृषि मंत्री को बताया कि देशभर में सिंचाई परियोजनाओं एवं जलाशयों के लिए जल उपलब्धता में वृद्धि हुई है, जिससे सिंचाई आधारित कृषि क्षेत्रों में भी कृषि विकास संभव हुआ है।

लाल चंदन की खेती करने वाले 18 किसानों को मिले 55 लाख

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण ने जारी की राशि



नई दिल्ली (कृषक जगत)। राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (एनबीए) ने राज्य जैव विविधता बोर्ड के माध्यम से तमिलनाडु में लाल चंदन (प्टेरोकार्पस सैंटालिनस) के 18 कृषकों को 55 लाख रुपये जारी किए हैं। ऐसा भारत के जैविक संसाधनों के निरंतर उपयोग को बढ़ावा देने के लिए पहुंच और लाभ साझाकरण (एबीएस) ढांचे के तहत किया गया। ये

किसान तिरुवल्लूर जिले के कन्नभिरन नगर, कोथुर, वेम्बेडु, सिरुनीयुम, गूनीपलायम, अम्मांबक्कम, अलीकुड़ी और थिम्माबूपोला पुरम नामक 8 गांवों के निवासी हैं।

एनबीए ने 2015 में लाल चंदन पर एक विशेषज्ञ समिति गठित की थी जिसकी सिफारिश पर किसानों को 55 लाख रुपये जारी किए गए हैं। समिति ने 'लाल चंदन के उपयोग से उत्पन्न

संरक्षण, सतत उपयोग और उचित एवं न्यायसंगत लाभ बंटवारे की नीति' शीर्षक से एक व्यापक रिपोर्ट तैयार की। समिति की सिफारिशों का एक प्रमुख परिणाम विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) द्वारा 2019 में नीतिगत छूट देना था, जिससे खेती वाले स्रोतों से लाल चंदन के निर्यात की अनुमति मिल गई। यह कृषि-आधारित संरक्षण और व्यापार को एक महत्वपूर्ण बढ़ावा है।

लाल चंदन पूर्वी घाटों की एक स्थानिक प्रजाति है, जो केवल आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। इसका पारिस्थितिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व है। इसकी खेती आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, ओडिशा और अन्य राज्यों में भी की जाती है।

आगरा में बनेगा सी-सार्क केंद्र

आलू उत्पादन और निर्यात को मिलेगी नई उड़ान



नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी की अध्यक्षता में अंतरराष्ट्रीय आलू केंद्र (CIP) के महानिदेशक श्री साइमन हेक और प्रस्तावित सी-सार्क - इंटरनेशनल पोटैटो सेंटर - (साउथ एशिया रीजनल सेंटर) की समन्वय समिति के अन्य सदस्यों की पहली बैठक आयोजित हुई।

बैठक में केंद्र की कार्ययोजना और संदर्भ शर्तों के अनुसार भविष्य की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई।

आगरा में स्थापित होने जा रहा यह केंद्र भारत को आलू और शकरकंद के उत्पादन, प्रसंस्करण और निर्यात के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व प्रदान करेगा। इसके माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने, उत्पाद की

गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों तक पहुंचाने, निर्यात में वृद्धि करने तथा नए रोजगार अवसर सृजित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति होगी।

सी-सार्क केंद्र आत्मनिर्भर भारत के विजन को सशक्त करेगा और किसानों को आधुनिक तकनीक, अनुसंधान तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग से लाभान्वित करेगा।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की समीक्षा बैठक

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत 6 हजार 206 करोड़ का बीमा क्लेम वितरित : डॉ. मीणा



जयपुर। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने और इसके क्रियान्वयन में आ रही बाधाओं को दूर करने के लिए पंत कृषि भवन के सभाकक्ष में कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत राज्य के बीमित कृषकों को अब तक 6 हजार 206 करोड़ रुपये का क्लेम वितरित किया जा चुका है।

कृषि मंत्री ने बीमा कंपनी अधिकारियों को निर्देशित किया कि बीमा क्लेम में आ रही समस्याएं, क्लेम सेटलमेंट और पोस्ट हार्वेस्टिंग से संबंधित प्रकरणों का समाधान कर किसानों को जल्द से जल्द बीमा क्लेम उपलब्ध कराया जाये। पारदर्शी फसल कटाई प्रयोग प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए शत-प्रतिशत फसल कटाई प्रयोग ऑनलाइन संपादित किये जायें।

उन्होंने बताया कि ऑनलाइन फसल कटाई प्रयोगों में राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में शामिल है। फसल कटाई प्रयोगों का आयोजन कार्यक्रम के अनुसार ही संपादित किया जाये। उन्होंने राजस्व विभाग और कृषि विभाग के जिलों

में पदस्थापित अधिकारियों का दो दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम रखकर फसल बीमा योजना संबंधी जानकारी का प्रशिक्षण देने के लिए कहा। जिससे अधिकारी फील्ड में रहकर बीमा क्लेम में आ रही समस्याओं का समाधान कर सकें।

डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि राज्य में डीएपी व यूरिया पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। राज्य सरकार किसानों को गुणवत्ता पूर्ण उर्वरक उपलब्ध

कराने के लिए सदैव प्रयासरत है। राज्य सरकार भारत सरकार से समन्वय बनाकर अधिकाधिक डीएपी व यूरिया की आपूर्ति के लिए प्रयासरत है। उर्वरकों की कालाबाजारी, जमाखोरी एवं नकली उर्वरकों पर अंकुश लगाने के लिए कृषि विभाग द्वारा समय समय पर विशेष गुण नियंत्रण अभियान चलाये जाते हैं। उन्होंने जिले में पदस्थापित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे

जमाखोरी व कालाबाजारी का पूर्ण ध्यान रखें और बॉर्डर एरिया के जिले में चेकपोस्ट स्थापित कर यूरिया व डीएपी के डाईवर्जन को रोकें।

शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी श्री राजन विशाल ने बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का मुख्य उद्देश्य अवांछित प्राकृतिक घटनाक्रम के कारण फसल हानि होने पर कृषकों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना, कृषकों की आय को सुदृढ़ करना, जिससे वे कृषि कार्य सुचारू रूप से कर सकें और किसानों को नवीन व आधुनिक कृषि कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना है। उन्होंने बताया कि फसल बीमा के लिए किसानों द्वारा खरीफ फसलों के लिए 2 प्रतिशत, रबी फसलों के लिए 1.5 प्रतिशत और बागवानी फसलों के लिए 5 प्रतिशत प्रिमियम देय है। शेष प्रिमियम अनुदान के रूप में राज्य व केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है। बैठक में आयुक्त कृषि एवं उद्यानिकी सुश्री चिन्मयी गोपाल, अतिरिक्त निदेशक कृषि (आदान) श्री गोपाल लाल जाट, बीमा कम्पनी प्रतिनिधी उपस्थित रहे और सभी अतिरिक्त निदेशक कृषि (विस्तार) खण्ड व सभी जिलों के संयुक्त निदेशक कृषि जिला परिषद् वीसी के माध्यम से जुड़े।

किसानों को उच्च गुणवत्ता युक्त कृषि आदान उपलब्ध करवाना ही हमारी प्राथमिकता

जयपुर। रबी फसल की बुवाई के मद्देनजर किसानों को उच्च गुणवत्ता युक्त कृषि आदान व बीज उपलब्ध कराने की मंशा से कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल खाद, बीज की गुणवत्ता सुनिश्चित करने और कालाबाजारी के खिलाफ अपनी जीरो टॉलरेंस नीति को जारी रखते हुए पूरे प्रदेश में अमानक खाद, बीज और कीटनाशक निर्माता फर्मों के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रहे हैं।

कृषि मंत्री ने बताया कि गत 3 व 4 जून को श्रीगंगानगर में 12 कृषि फर्मों का निरीक्षण किया गया, जिनमें निरीक्षकों द्वारा 8 फर्मों के 40 बीज नमूने लिए गये। इन 40 नमूनों में से 33 नमूनों को राजकीय बीज परीक्षण प्रयोगशाला ने मानक घोषित किया। 7 नमूने अमानक पाये जाने

28 सितम्बर को हनुमानगढ़ के सांगरिया में मेसर्स स्टार एग्री के गोदाम में रखे मेसर्स राशि सीड्स प्रा. लि. के 8 हजार 569 क्विंटल गेहूं बीज के कुल 60 नमूने परीक्षण हेतु राजकीय बीज परीक्षण प्रयोगशाला में भिजवाकर 30 दिन के लिए विक्रय पर रोक लगाई गई। इसी प्रकार मेसर्स स्टार एग्री सीड्स प्रा.लि. द्वारा उत्पादित 63.50 क्विंटल सरसों बीज के विक्रय पर रोक लगाकर 2 नमूने राजकीय बीज परीक्षण प्रयोगशाला भिजवाये गये हैं।

कृषि मंत्री द्वारा सितम्बर माह में हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिले में खरीफ- 2025 में लिए गए बीज उत्पादन कार्यक्रम का निरीक्षण किया गया, जिसमें कई अनियमितताएं पाई गईं। बीज उत्पादन कार्यक्रम के निरीक्षण में पाई गई कमियों व अनियमितताओं के कारण ग्वार का कुल 271.3 हेक्टेयर और मूंग का कुल 10 हेक्टेयर बीज उत्पादन कार्यक्रम निरस्त किया गया है।

बीज उत्पादक मेसर्स जयशंकर सीड्स का संपूर्ण बीज उत्पादन कार्यक्रम में 222.9 हेक्टेयर में ग्वार, कृषक भारती कॉर्पोरेटिव लिमिटेड का 10 हेक्टेयर में मूंग का बीज उत्पादन, मेसर्स प्रियाली नैचूरल्स प्रा. लि. का 7.9 हेक्टेयर में ग्वार का उत्पादन, मेसर्स गणपति सीड्स का 7.6 हेक्टेयर में बीज उत्पादन, मेसर्स भारत सीड्स का 6.8 हेक्टेयर, मेसर्स रामदेव सीड्स का 8 हेक्टेयर, मेसर्स श्रीराम सीड्स सॉल्यूशन का 8 हेक्टेयर, मेसर्स धारीवाल सीड्स का 6 हेक्टेयर और कृषि विकास सहकारी समिति लिमिटेड का 6 हेक्टेयर ग्वार बीज उत्पादन कार्यक्रम निरस्त किये गये हैं।

बीज उत्पादक फर्म मेसर्स अमूल सीड्स श्रीगंगानगर का लाइसेंस रद्द किया गया है। मेसर्स अमूल सीड्स, मेसर्स श्रीराम सीड्स प्रा.लि. और मेसर्स संगम सीड्स श्रीगंगानगर द्वारा रबी 2024-25 में उत्पादित रॉ बीज की मात्रा क्रमशः 4012.60 क्विंटल, 3259.60 क्विंटल और 1599.60 क्विंटल का इन्टेक भौतिक सत्यापन में पाई गई कमियों के कारण निरस्त किया गया है। कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा गत 27 व

राज्य में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद योजना का हो रहा प्रभावी क्रियान्वयन

5 लाख किसानों से अब तक खरीदी 8 हजार 191 करोड़ रुपये की उपज

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार किसानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। किसानों को उनकी उपज का उचित दाम मिले, इसके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद योजना का राज्य में प्रभावी क्रियान्वयन कर किसानों से बड़े स्तर पर कृषि जिनसे की खरीद की जा रही है। समर्थन मूल्य पर वृहद् स्तर पर हो रही खरीद से किसानों को बाजार की अनिश्चितताओं से मुक्ति मिल रही है और उन्हें सुनिश्चित आय मिल रही है।

सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम कुमार दक ने बताया कि राज्य सरकार के 2 वर्ष से भी कम अवधि के अब तक के कार्यकाल में पूर्ववर्ती सरकार के 5 वर्ष के कार्यकाल की तुलना में विभिन्न जिनसे की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर आनुपातिक दृष्टि से अधिक खरीद कर किसानों को प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित किया गया है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार के कार्यकाल में अब तक लगभग 5 लाख किसानों से 8 हजार 191 करोड़ रुपये की उपज खरीदी जा चुकी है। वहीं, खरीफ-2025 सीजन में भी एमएसपी पर कृषि जिनसे बेचान के लिए बड़ी संख्या में किसान अपना पंजीयन करवा रहे हैं।

श्री दक ने बताया कि पूर्ववर्ती सरकार के कार्यकाल में 5 वर्ष में 2 हजार 827 करोड़ रुपये राशि का 3.90 लाख मीट्रिक टन मूंग किसानों से खरीदा गया था, जिसकी तुलना में वर्तमान सरकार के 2 वर्ष से भी कम अवधि के कार्यकाल में 1 हजार 720 करोड़ रुपये का भुगतान कर किसानों से लगभग 2 लाख मीट्रिक टन मूंग खरीदा जा चुका है। उन्होंने बताया कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल

में मूंगफली की रिकॉर्ड खरीद की गई है। पूर्ववर्ती सरकार के पूरे कार्यकाल में 1 लाख 74 हजार 656 किसानों से 2,058 करोड़ रुपये राशि की 4 लाख 79 हजार 515 मीट्रिक टन मूंगफली खरीदी गई थी जबकि वर्तमान सरकार के अब तक के कार्यकाल में ही 1 लाख 42 हजार 58 किसानों से 3 हजार 269 करोड़ रुपये राशि की 4 लाख 84 हजार 687 मीट्रिक टन मूंगफली खरीदी जा चुकी है। यह पूर्ववर्ती सरकार के 5 वर्ष के कार्यकाल से भी अधिक है।

सहकारिता मंत्री ने बताया कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में राज्य में सोयाबीन की भी रिकॉर्ड खरीद की गई है। पूर्ववर्ती सरकार के 5 वर्ष के कार्यकाल में महज 16 किसानों से 13 लाख रुपये की 37.20 मीट्रिक टन सोयाबीन की खरीद की गई थी। इसकी तुलना में वर्तमान सरकार के अब तक के कार्यकाल में 36 हजार 891 किसानों से 483 करोड़ रुपये की 98 हजार 761 मीट्रिक टन सोयाबीन की खरीद की जा चुकी है। श्री दक ने बताया कि खरीफ-2025 सीजन के अंतर्गत मूंग, मूंगफली, उड़द और सोयाबीन खरीद के लिए पंजीयन की प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है और शीघ्र ही किसानों से जिनसे की खरीद शुरू की जाएगी। श्री दक ने बताया कि खरीफ-2025 सीजन में एमएसपी पर कृषि जिनसे बेचान के लिए अब तक 2.96 लाख से अधिक किसान अपना पंजीयन करवा चुके हैं। इनमें से मूंग बेचान के लिए 93 हजार 728, मूंगफली के लिए 1 लाख 82 हजार, सोयाबीन के लिए 19 हजार 432 एवं उड़द बेचान के लिए 1,114 किसानों ने अपना पंजीयन करवाया है।

- कृषि जिनसे की एमएसपी पर रिकॉर्ड खरीद से लाभान्वित हो रहे किसान
- मूंग, मूंगफली और सोयाबीन की हुई रिकॉर्ड खरीद
- खरीफ-2025 के लिए अब तक 2.96 लाख किसानों ने कराया पंजीयन

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्दित्रा - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराडे

अमृत जगत

मित्रता और शत्रुता के भाव तो बादलों के समान
क्षण-क्षण बदलते रहते हैं। - महाभारत

महाराष्ट्र में पिछले महीने हजारों किसानों ने कर्जमाफी, न्यूनतम समर्थन मूल्य और अन्य मांगों को लेकर राष्ट्रीय राजमार्ग पर प्रदर्शन किया। करीब 30 किलोमीटर लंबे जाम के बाद यह आंदोलन मुम्बई उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप पर स्थगित हुआ। बताया जाता है कि जून 2025 तक राज्य के किसानों पर करीब रु. 37,000 करोड़ का कृषि ऋण बकाया था। एन.डी.ए. ने विधानसभा चुनाव में किसानों का ऋण माफ करने का वादा किया था, लेकिन समय पर पालन न होने से किसान असंतोष में हैं।

इधर मध्यप्रदेश में भी करीब साढ़े चार लाख किसानों को ऋण नहीं चुका पाने पर डिफाल्टर घोषित कर दिया गया है, जिसके कारण उन्हें सहकारी समितियों से खाद नहीं मिल रही। रबी की बुआई के समय यह निर्णय किसानों के लिए गंभीर संकट बन सकता है।

दरअसल, किसानों की इस दशा के लिए राजनीतिक दल काफी हद तक जिम्मेदार हैं। चुनावों के समय सभी दल कर्जमाफी

कृषि ऋण: राजनीति के कुचक्र में फंसे किसान !

और नकद हस्तांतरण जैसी घोषणाओं से मतदाताओं को लुभाते हैं, पर सत्ता में आने के बाद वादे निभाने में चूक जाते हैं। महाराष्ट्र का हालिया आंदोलन इसी प्रवृत्ति का परिणाम है।

कर्जमाफी की राजनीति ने किसानों में भी गलत प्रवृत्ति पैदा की है। अब वे यह मानकर चलने लगे हैं कि चुनावों के बाद ऋण माफ



हो जाएगा, इसलिए समय पर भुगतान की जरूरत नहीं। इस सोच ने सहकारी बैंकों की वित्तीय स्थिति को भी कमजोर किया है। परिणामस्वरूप सरकारों पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है, और अंततः इसका असर आम जनता पर पड़ता है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं से किसानों को कुछ राहत जरूर मिलती है, लेकिन बढ़ती लागत, खाद-बीज की महंगाई और अनियमित मौसम के सामने यह सहायता नगण्य है। किसान आज भी प्राकृतिक आपदाओं और बाजार की अस्थिरता के बीच जूझ रहा है।

तीन दशक पहले तक किसान ऋण समय पर चुका देते थे, पर जबसे राजनीतिक दलों ने कर्जमाफी को चुनावी हथियार बनाया है, तबसे भुगतान अनुशासन टूट गया है। यह प्रवृत्ति न केवल कृषि अर्थव्यवस्था को कमजोर कर रही है बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर बनने से भी रोक रही है।

समस्या का समाधान चुनावी वादों में नहीं, बल्कि दीर्घकालिक नीतिगत सुधारों में है। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिले, न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम दाम पर बिक्री न हो, प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन मिले और कृषि अधोसंरचना — पानी, बिजली, खाद, बीज जैसी मूलभूत सुविधाएं सुदृढ़ की जाएं।

राजनीतिक दलों को चाहिए कि वे मतदाताओं को केवल प्रलोभन न दें, बल्कि वादों को समयबद्ध तरीके से पूरा करें। किसान को राहत की नहीं, विश्वास और स्थिरता की जरूरत है। जब तक राजनीति कर्जमाफी की जगह उत्पादन और मूल्य सुधार को प्राथमिकता नहीं देगी, तब तक किसान इस कुचक्र में फंसा ही रहेगा।

खेतों में महिलाओं का अदृश्य श्रम और मान्यता की लड़ाई

• निलेश देसाई

भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को अक्सर 'अन्नदाता पुरुष किसान' के रूप में देखा जाता है। खेतों की तस्वीरों में हल चलाते या मंडी में सौदा करते पुरुष दिखते हैं, परंतु इस दृश्य के पीछे वह श्रम है जो दिखाई नहीं देता—महिलाओं का। वे खेत में बीज डालती हैं, पौध रोपती हैं, निराई-गुड़ाई करती हैं, फसल काटती हैं, मवेशियों की देखभाल करती हैं और घर की रसोई तक अनाज पहुंचाती हैं। फिर भी, न तो उन्हें किसान कहा जाता है, न नीति में वह स्थान मिलता है जिसकी वे अधिकारी हैं। भारत में कृषि जनगणना (2015-16) बताती है कि कुल कृषि श्रम का लगभग 73 प्रतिशत कार्य महिलाएं करती हैं, लेकिन जमीन के स्वामित्व में उनका हिस्सा केवल 13 प्रतिशत है। यह असमानता केवल आंकड़ों में नहीं, बल्कि पहचान के संकट में है—वे किसान हैं, पर 'किसान' नहीं कहलाती।

झाबुआ जैसे आदिवासी इलाकों में यह स्थिति और गहराई से महसूस होती है। संपर्क संस्था के लंबे अनुभव बताते हैं कि महिलाएं खेती की हर प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। वे ही बीजों का चयन और संरक्षण करती हैं, पौधों की रोपाई, निराई-गुड़ाई, जैविक खाद की तैयारी, फसल कटाई और पशुपालन तक हर काम संभालती हैं। इन कार्यों में उनका पारंपरिक ज्ञान, मौसमी समझ और बारीकी से जुड़ी मेहनत ही स्थानीय खेती को टिकाऊ बनाए रखती है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों में महिलाएं खेत और घर के बीच पुल की तरह हैं—एक ओर वे उत्पादन में लगी हैं, दूसरी ओर घर की खाद्य सुरक्षा और पोषण की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर है।

महिला खेत पाठशालाएं

संपर्क संस्था द्वारा संचालित कई गांवों में जब

'महिला खेत पाठशालाएं' शुरू की गईं, तो यह पहली बार सामने आया कि महिलाएं कितनी गहरी कृषि समझ रखती हैं। मिट्टी परीक्षण, देसी बीजों की पहचान, गोमूत्र और नीम से जैविक घोल तैयार करने की विधियां—ये सब वे सहज रूप से जानती थीं। परंतु



जब प्रशिक्षण या योजना की बात आती थी, तो सरकारी अभिलेखों में किसान के रूप में केवल पुरुष का नाम दर्ज होता था। परिणामस्वरूप महिलाएं कृषि ऋण, फसल बीमा या किसान क्रेडिट कार्ड जैसी सुविधाओं से वंचित रह जाती थीं।

झाबुआ में कई बार यह भी देखा गया कि जब सूखा या बेमौसमी वर्षा ने फसल को नुकसान पहुंचाया, तो महिलाओं ने ही वैकल्पिक आजीविका के उपाय खोजे—सब्जी बाड़ी, बकरी पालन, या देसी बीजों का आदान-प्रदान। संपर्क

संस्था द्वारा संचालित 'पशु सखी' कार्यक्रम में दर्जनों महिलाएं प्रशिक्षित होकर न केवल अपने गांव में पशु स्वास्थ्य की सेवा दे रही हैं, बल्कि अतिरिक्त आमदनी भी अर्जित कर रही हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि जब महिलाओं को निर्णय का अधिकार और तकनीकी सहयोग मिलता है, तो वे न केवल उत्पादन बढ़ाती हैं बल्कि पूरे समुदाय की आर्थिक स्थिरता को भी मजबूत करती हैं।

देसी बीज बैंक

जलवायु परिवर्तन के दौर में यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। जब वर्षा चक्र अनिश्चित हो रहे हैं,

खेतों में बीज से लेकर फसल तक का अधिकांश कार्य महिलाएं करती हैं, परंतु पहचान और नीति में वे अब भी हाशिए पर हैं। झाबुआ जैसे इलाकों में उनके श्रम, पारंपरिक ज्ञान और नेतृत्व ने यह सिद्ध किया है कि टिकाऊ कृषि का भविष्य महिला किसानों के हाथों में है।

जलस्रोत सूख रहे हैं, और मिट्टी की उर्वरता घट रही है, तब महिलाएं अपने अनुभव और पारंपरिक ज्ञान से अनुकूलन (adaptation) के नए रास्ते खोज रही हैं। झाबुआ के कुछ गांवों में महिलाओं ने सामूहिक रूप से देसी बीज बैंक बनाए हैं, स्थानीय फसलों की मिश्रित खेती शुरू की है और खेतों में जल संरक्षण के लिए छोटे-छोटे गड्ढे और बोरी बंधन तैयार किए हैं। यह कार्य संपर्क संस्था के मार्गदर्शन में हुआ है, पर असली नेतृत्व गांव की महिलाओं ने ही निभाया है। उनके

अनुसार 'जल और बीज दोनों को बचाना ही आने वाले समय में खेती को बचाना है।'

कृषि नीति के स्तर पर देखें तो महिला किसानों की पहचान अभी भी अधूरी है। भूमि का स्वामित्व प्रायः पुरुषों के नाम पर होता है, जिससे महिलाएं 'सहायक' के रूप में देखी जाती हैं, 'निर्णयकर्ता' के रूप में नहीं। संपर्क के अनुभव बताते हैं कि जहां-जहां भूमि का संयुक्त स्वामित्व (joint title) पति-पत्नी के नाम पर हुआ, वहां महिलाओं की भागीदारी निर्णयों में स्पष्ट रूप से बढ़ी है। वे न केवल तकनीकी सलाह लेती हैं, बल्कि बाजार से सौदे भी खुद तय करने लगी हैं। यह आत्मविश्वास केवल अधिकार से आता है।

महिला किसानों को नीति, योजना और संसाधनों में बराबर की हिस्सेदारी हो

नीतियों में भी अब यह मान्यता दी जानी चाहिए कि किसान केवल वह नहीं जो हल चलाता है, बल्कि वह भी जो मिट्टी की नमी, बीज की पहचान, पशु की सेहत और घर की थाली—सबके बीच संतुलन बनाए रखता है। किसान एक प्रक्रिया है, और इस प्रक्रिया का आधा हिस्सा महिलाएं निभा रही हैं। यदि हम टिकाऊ और न्यायपूर्ण कृषि की दिशा में बढ़ना चाहते हैं, तो महिला किसानों को नीति, योजना और संसाधनों में बराबर की हिस्सेदारी देना अनिवार्य है।

झाबुआ के अनुभव यह भी बताते हैं कि जब महिलाएं संगठित होती हैं, तो केवल खेत ही नहीं, पूरा समुदाय बदलता है। महिला किसान समूहों ने न केवल अपनी खेती सुधारी, बल्कि गांवों में बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वच्छता के मुद्दों पर भी सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने सिद्ध किया कि 'कृषि' केवल उत्पादन नहीं, बल्कि जीवन जीने की सामूहिक प्रक्रिया है।

भारत के खेतों में हर उगती फसल, हर बोया बीज किसी न किसी महिला के हाथों से जुड़ा है। फिर भी जब नीतियां बनती हैं, तो उनका नाम सूचियों में नहीं होता। अब समय है कि यह अदृश्यता समाप्त हो। खेत की आधी आबादी को नीति में आधी हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। जब महिलाएं किसान के रूप में पहचानी जाएंगी, तभी भारतीय कृषि सचमुच 'समानता, स्थायित्व और सम्मान' की दिशा में आगे बढ़ेगी।

(संप्रेष)

फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (प्रोम) का उत्पादन एवं प्रयोग -2

कृषि उत्पादन में प्रोम खाद की उपयोगिता

- अनिल कुमार सिंह ● सिद्धार्थ नायक
 - अक्षता तामर ● ऋचा सिंह
 - दिनेश कुमार सिंह ● रश्मि शुक्ला
- email : aksjnkvv01@gmail.com

प्रोम के प्रयोग के लाभ

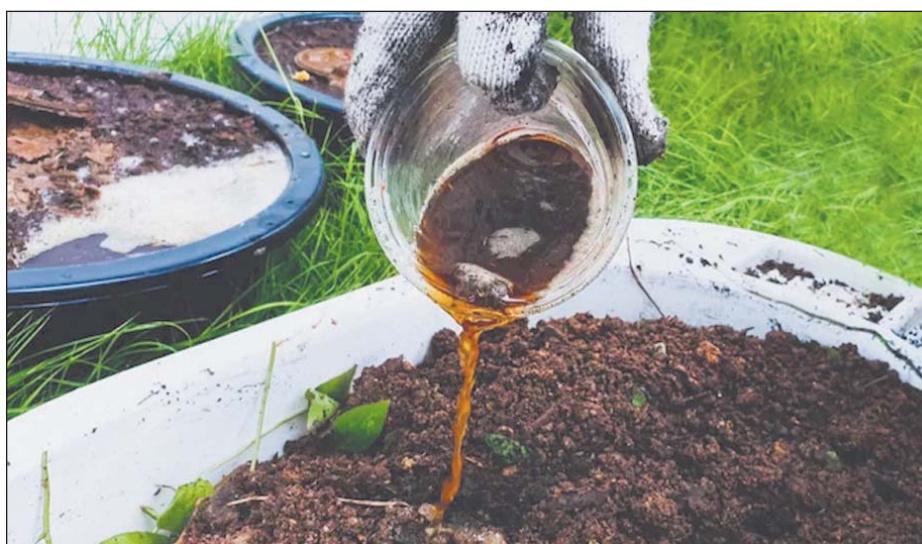
- प्रोम धीमी गति से मुक्त होने वाली खाद है, जो सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी), डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) या मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी) जैसे सिंथेटिक उर्वरकों की तुलना में खेती में अधिक प्रभावी है।
- चूँकि कच्चा रॉक फॉस्फेट अत्यधिक जैव रासायनिक रूप से घुलनशील फॉस्फेट में परिवर्तित हो जाता है, इसलिए पौधों को सीधे इससे पोषण मिल सकता है।
- इसमें तीन प्रमुख पोषक तत्व होते हैं - (अ). फॉस्फोरस, (ब). जीवांश कार्बन, (स). नाइट्रोजन।
- प्राथमिक पोषक तत्वों के साथ-साथ तांबा, जस्ता और बोरॉन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करता है।
- डीएपी के विकल्प के रूप में कार्य करता है और मिट्टी को लंबे समय तक पोषक तत्वों से भरपूर और पौष्टिक बनाता है।
- उपचारित क्षेत्र में बोई गई अन्य फसलों को भी उतनी ही कुशलता से फास्फोरस की आपूर्ति करता है जितनी कि पहली फसल को।
- उच्च उपज और बेहतर गुणवत्ता वाला उत्पादन प्राप्त होता है।
- मिट्टी की संरचना, सांद्रता जैसे मिट्टी के भौतिक गुणों में सुधार करता है और मिट्टी के कणों को समग्र सांद्रता में बाँधता है।
- अपघटन के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित होती है और मृदा क्षारीयता को कम

फॉस्फेट युक्त जैविक खाद का संगठन

घटक	मात्रा
नमी प्रतिशत-भार के अनुसार	25.0 (अधिकतम)
कण आकार (4.0 मिमी छलनी से गुजरने पर)	90 प्रतिशत (न्यूनतम)
बल्क डेंसिटी (ग्राम/क्यूबिक सेमी)	1.0 से कम
कुल जीवांश कार्बन	7.9 प्रतिशत
कुल नाइट्रोजन भार के अनुसार	0.4 प्रतिशत (न्यूनतम)
कुल फॉस्फेट (पी2ओ5)	10.4 प्रतिशत (न्यूनतम)
प्रतिशत-भार के अनुसार	
कार्बन : नाइट्रोजन अनुपात	20 : 1 से कम
पीएच मान (1:5 घोल)	6.7 (अधिकतम)
विद्युत चालकता	8.2
(डेसी सायमन प्रति मीटर)	
भारी धातु सामग्री (मिलीग्राम/किग्रा)	
आर्सेनिक	10.00 (अधिकतम)
कैडमियम	5.00 (अधिकतम)
क्रोमियम	50.00 (अधिकतम)
कॉपर	300.00 (अधिकतम)
पारा (मरकरी)	0.15 (अधिकतम)
निकेल	50.00 (अधिकतम)
सीसा (लेड)	100.00 (अधिकतम)
जस्ता	1000.00 (अधिकतम)

नोट: इस फॉस्फेट युक्त जैविक खाद का उपयोग सभी अनाज, दलहनी, तिलहनी फसलों, सब्जियों, फलों और फूलों की फसलों में किया जा सकता है।

पिछले दो दशकों से, जैविक खेती में फॉस्फेट रिच आर्गेनिक मैन्योर (फॉस्फेट युक्त जैविक खाद-प्रोम) का उपयोग शामिल है, जो डीएपी, एमएपी, एसएसपी और नाइट्रोफॉस्फेट जैसे कृत्रिम रासायनिक उर्वरकों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। फॉस्फेट युक्त जैविक खाद उच्च-श्रेणी रॉक फॉस्फेट (32 प्रतिशत पी2ओ5, 2 प्रतिशत कम अथवा अधिक) को बहुत बारीक मात्रा में मिलाकर बनाई जाती है। फॉस्फेट रत्न अयस्क को वर्मीकम्पोस्ट या अवायवीय पाचक अपमार्जक (बायोगैस इकाइयों से निकलने वाली स्लरी) जैसे जैविक खाद की उपस्थिति में बैसिलस मेगाथेरियम, वैरफॉस्फेटिक (फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु) और एजोटोबैक्टर (नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु) के सूक्ष्मजीव संवर्धन का उपयोग करके उपयोगी फॉस्फेट में जैव-रूपांतरित करके फॉस्फेट युक्त जैव उर्वरक तैयार किया जा सकता है। यह एक प्रकार का उर्वरक है जिसका उपयोग सिंगल सुपरफॉस्फेट और डायमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) के विकल्प के रूप में किया जाता है। सभी पौधों को फास्फोरस की आवश्यकता होती है, लेकिन चूँकि मिट्टी में फास्फोरस का स्तर कम होता है, यह कृषि के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है। कृषि उत्पादन के लिए आदर्श व्यापक पादप वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए फास्फोरस को मिट्टी में खासकर कूड़ों में प्रदान किया जाना चाहिए। इसकी घुलनशीलता मिट्टी के पीएच, आसपास के वातावरण और उसमें मौजूद जीवाणुओं से प्रभावित होती है।



करने में मदद करती है।

- जल धारण क्षमता में सुधार करती है और अंतःस्पंदन को बढ़ाती है।
- बफरिंग एजेंट के रूप में कार्य करते हुए, ये उच्च अम्लता और क्षारीयता के कारण होने वाले मृदा क्षरण को कम करने में मदद करते हैं।
- प्रोटीन, तेल और अमीनो अम्लों के संश्लेषण में उपयोग किया जाता है।
- बायोगैस संयंत्रों से निकलने वाले अम्लीय अपशिष्ट टोस पदार्थों का उपयोग करके इसका उत्पादन किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण सुरक्षित रहता है और जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलती है।
- जैविक खाद की उपस्थिति के कारण, निक्षालन और अपवाह रुक जाता है, मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता में सुधार होता है।
- फॉस्फेट चट्टान से फॉस्फोरिक अम्ल या मौलिक फॉस्फोरस का उत्पादन पूरी तरह से निःशुल्क है।
- प्रोम का उत्पादन काफी हद तक लागत प्रभावी है क्योंकि यह एक कम ऊर्जा प्रक्रिया है जिसमें उच्च

तापमान या उच्च दबाव की आवश्यकता नहीं होती है, किसी रासायनिक उत्प्रेरक की आवश्यकता नहीं होती है, और इसमें किसी भी महंगे रसायन का उपयोग नहीं होता है।

- प्रोम वास्तव में लवणीय मृदाओं में

फॉस्फेट खनिज के संरक्षण में भी मदद मिलेगी, जो उच्च अवशिष्ट प्रभाव के कारण एक गैर-नवीकरणीय संसाधन है।

- इस नए फॉस्फेट उर्वरक की कृषि-कुशलता बाजार में उपलब्ध जटिल फॉस्फेट उर्वरकों की तुलना में बेहतर है। प्रोम तटस्थ और क्षारीय मिट्टी के लिए उपयुक्त है, जो भारतीय किसानों के लिए एक वरदान साबित होगा।

कृषि में प्रोम

कृषि फसलों में प्रोम का प्रयोग सुगमता से किया जा सकता है क्योंकि यह देखा गया है कि पौधे इसे आसानी से अवशोषित कर लेते हैं। क्षारीय और अम्लीय, दोनों ही प्रकार की मिट्टी में, यह समान रूप से प्रभावी ढंग से कार्य करता है। कई क्षेत्रीय परीक्षणों से पता चला है कि फसल उत्पादन के मामले में प्रोम, एसएसपी, डीएपी या एमएपी जैसे सिंथेटिक उर्वरकों के बराबर (या अक्सर उनसे बेहतर) प्रदर्शन करता है। नीचे तालिका में सोयाबीन और मूंगफली जैसी फसलों, धान, गेहूँ और जौ जैसे अनाज, गोभी और प्याज जैसी सब्जियों की उपज पर कुछ विशिष्ट निष्कर्ष दिए गए हैं। गेहूँ और सोयाबीन के लिए एसएसपी (सिंगल सुपरफॉस्फेट) और धान, जौ, मूंगफली, गोभी और प्याज के लिए डीएपी (डायमोनियम फॉस्फेट) जैसे अक्सर उपयोग किए जाने वाले सिंथेटिक फॉस्फेट उर्वरकों की तुलना की गई है। प्रोम से प्राप्त सब्जियों, अनाजों और फसलों की उपज प्रायः मिट्टी में सिंथेटिक फॉस्फेटिक उर्वरकों (एसएसपी, डीएपी) के उपयोग से प्राप्त उपज से बेहतर और काफी तुलनीय होती है।

कच्चे फॉस्फेट रॉक और जैविक खाद, यथा वर्मीकम्पोस्ट या एनारोबिक डाइजेस्टर अपशिष्ट का उपयोग फॉस्फेटिक जैव उर्वरक (प्रोम) तथा एडीएस प्रोम बनाने के लिए सफलतापूर्वक किया जा सकता है। जैव उर्वरक की गुणवत्ता में सुधार के लिए, एजोटोबैक्टर और बैसिलस मेगाथेरियम जैसे सूक्ष्मजीवी संवर्धनों का भी उपयोग किया जा सकता है। इस फॉस्फेट युक्त जैविक खाद से मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में वृद्धि होती है, जिससे फसल उत्पादन में भी वृद्धि होती है। यह मिट्टी की विद्युत चालकता और मिट्टी के लाभकारी सूक्ष्मजीवों की सक्रियता को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, मिट्टी का पीएच मान बनाए रखता है। यह ह्यूमस के निर्माण को प्रोत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रभावी जड़ निर्माण को बढ़ावा देता है और बीज अंकुरण के प्रतिशत को बढ़ाता है। यह फसल की गंभीर रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाता है। यह उत्पाद पर्यावरण अनुकूलित है अतः इसके प्रयोग से विभिन्न सिंथेटिक उर्वरकों में व्यय लागत में बचत के साथ-साथ बेहतर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

विभिन्न फसलों में प्रोम की संस्तुत मात्रा

फसल	मात्रा प्रति एकड़ (बुवाई के समय)	प्रति एकड़ (खड़ी फसल)
सोयाबीन	100 किग्रा.	-
आलू	100 किग्रा.	-
प्याज	100 किग्रा.	-
लहसुन	100 किग्रा.	-
गेहूँ	100 किग्रा.	-
चना	100 किग्रा.	-
हरी मिर्च	100 किग्रा.	100 किग्रा.
टमाटर	100 किग्रा.	100 किग्रा.
कपास	100 किग्रा.	100 किग्रा.
सब्जियाँ	100 किग्रा.	100 किग्रा.
फलों के बगीचे	100 किग्रा.	500 ग्राम/पौधा, हर 3 माह में

फॉस्फेट उर्वरक के रूप में प्रभावी है जहाँ डीएपी पूरी तरह से विफल रहा है।

- मृदा सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को बढ़ाता है जो मिट्टी में या प्राकृतिक रूप से मौजूद फास्फोरस के विघटन में सहायक होते हैं।

- प्रोम के उपयोग से किसानों के लिए उर्वरक की लागत कम होगी और

सिंथेटिक फॉस्फेटिक उर्वरक के साथ प्रोम का तुलनात्मक अध्ययन

फसल	एसएसपी	डीएपी	प्रोम	एडीएस से तैयार प्रोम	वर्मीकम्पोस्ट से तैयार प्रोम
गेहूँ	28.9	-	29.5	29.09	28.8
सोयाबीन	10.37	-	11.69	11.55	11.0
मूंगफली	-	30.29	31.08	31.33	30.67
धान	30	39.1	43.85	43.75	42.5
जौ	-	56.23	69.69	70.2	67.25
गोभी	-	116.65	136.1	134.37	136.25
प्याज	-	165.19	167.16	166.66	164.55

स्रोत: खटीक एवं सहयोगी, एग्री आर्टिकल्स (2022)

हरी पत्तेदार सब्जियां आएं

भूमि- हरी पत्तेदार सब्जियों की खेती सभी प्रकार की भूमि में आसानी से की जा सकती है किन्तु बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. मान 6-7 एवं जल निकास की उचित व्यवस्था हो इनकी खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।

उत्तम किस्में- पालक -पूसा भारती, आलगीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित, जोबनेर-ग्रीन, एच. एस. 23।

मैथी- हिसार सोनाली, मुक्ता, पूसा अली बंच-, आरएमटी-1, कसूरी।

लालसाग- पूसा लाल चौलाई, पूसा कीर्ति, पूसा किरण।

सलाद पत्ता: ग्रेट लेक, चाईनीज येलो।

खाद व उर्वरक- बुवाई से पूर्व 100 किंटल अच्छी व सड़ी हुई गोबर खाद, 100 किलो ग्राम नत्रजन, 100 कि. ग्रा. फास्फोरस तथा 40 कि. ग्रा. पोटाश/हे. की दर से भूमि में मिलाकर बुवाई करें। प्रत्येक कटाई



के बाद 25 कि. ग्रा. नत्रजन/हे. की दर से छिटक कर दें। इससे अधिक उपज प्राप्त होती है।

बुआई विधि - बीज बुवाई के लिए सर्वप्रथम क्यारियों में खाद डालकर अच्छी तरह से मिला दें और भुरभुरी कर लें। यदि नमी न हो तो बुआई के पहले

फसल	कतार से कतार की दूरी	बीज से बीज की दूरी
पालक	20 सेमी.	3-4 सेमी.
मैथी	20-25 सेमी.	3-4 सेमी.
चौलाई (छोटी)	20-25 सेमी.	4-5 सेमी.
चौलाई (बड़ी)	30-35 सेमी.	4-5 सेमी.

क्यारियों में पलेवा या सिंचाई कर पर्याप्त नमी बना लें। तत्पश्चात बीजों की बुवाई करें। बीज 10-15 सेमी. की दूरी पर बनी लाइनों में बोयें। आवश्यकता से अधिक पौधों को निकाल दें। पत्तियों की कटाई करते समय यह ध्यान रखें कि कटाई जमीन की सतह से 3-5 सेमी. ऊपर से ही करें।

खरपतवार नियंत्रण- क्यारियों से खरपतवार निकालकर क्यारी सदैव साफ-सुथरी रखनी चाहिए ताकि पौधों के बढ़ने में कोई असुविधा न हो। यदि आवश्यकता पड़े तो समय-समय पर हल्की निंदाई - गुड़ाई भी करते रहें। इनसे पत्तियों की पैदावार - गुणवत्ता युक्त और अधिक प्राप्त होती है तथा कीड़ों का प्रकोप भी कम होता है।

सिंचाई- सब्जियों की किस्म, मिट्टी की दशा व

हरी पत्तेदार सब्जियों की बीज दर, बुवाई का उपयुक्त समय एवं कटाई

बीज दर/हे.	बुवाई समय	पत्तियों की कटाई (कि.ग्रा.)
पालक	25-30	सितम्बर-अक्टूबर
विलायती पालक	15-20	सितम्बर-अक्टूबर
मैथी (देशी)	20-25	सितम्बर-मध्य नवम्बर
मैथी (कसूरी)	10-15	सितम्बर-मध्य नवम्बर
चौलाई (छोटी)	2-2.5	फरवरी-मार्च
चौलाई (बड़ी)	5-7	जून-जुलाई व फरवरी-मार्च

मौसम को ध्यान में रखकर समय-समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। रोपण किये गये पौधों की अपेक्षा पुराने पौधों को अपेक्षाकृत कम सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। वर्षा ऋतु के अधिक पानी को बाहर निकालने की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। बीज की बुवाई सदैव नमीयुक्त स्थिति में करनी चाहिए। सूखे खेत में बीज की बुवाई करने या बीज की बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई करने पर मिट्टी बैठ जाती है। और अंकुरण अच्छा नहीं होता है।

कटाई - बुआई के 25-30 दिन बाद प्रथम कटाई करें, बाद में 15-20 दिन के अंतर पर कटाई करते रहें।

उपज-

फसल	उपज किंटल/हे.	कटाई संख्या
पालक	100-150	4-8
मैथी	80-100	3-5
चौलाई	70-100	6-7

- डॉ. लवेश कुमार चौरसिया
- डॉ. अशोक कुमार वर्मा

ब्रह्मास्त्र

ब्रह्मास्त्र बनाने हेतु आवश्यक सामग्री:

- 10 लीटर गोमूत्र
- 3 किलोग्राम नीम की पत्ती की चटनी
- 2 किलोग्राम करंज की पत्तों की चटनी
- 2 किलोग्राम सीताफल पत्ते की चटनी



- 2 किलोग्राम बेल के पत्ते
- 2 किलोग्राम अंडी के पत्ते की चटनी
- 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते की चटनी

बनाने की विधि: इन सभी सामग्री में से कोई भी पांच सामग्री के मिश्रण को गोमूत्र में मिट्टी के बर्तन पर डाल कर आग में उबाले जैसे चार उबले आ जाए तो आग से उतारकर 48 घंटे छाए में ठंडा होने दें। इसके बाद कपड़े से छानकर भंडारण करें।

अवधि प्रयोग: ब्रह्मास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते हैं।

सावधानियां: भंडारण मिट्टी के बर्तन में करें गोमूत्र धातु के बर्तन में न रखें।

छिड़काव: एक एकड़ हेतु 100 लीटर पानी में 3 से 4 लीटर ब्रह्मास्त्र मिला कर छिड़काव करें।

जैविक कीटनाशक बनाने की विधि एवं व्याधि नियंत्रण

अग्नी अस्त्र
(तना कीट फलों में होने वाली सूंडी एवं इल्लियों के लिए)

बनाने हेतु आवश्यक सामग्री:

- 20 लीटर गोमूत्र
- 5 किलोग्राम नीम के पत्ते की चटनी
- आधा किलोग्राम तम्बाकू का पाउडर
- आधा किलोग्राम हरी तीखी मिर्च
- 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी

बनाने की विधि: उपयुक्त ऊपर लिखी हुई सामग्री को एक मिट्टी के बर्तन में डालें और आग से चार बार उबाल आने दें। फिर 48 घंटे छाए में रखें। 48 घंटे में चार बार उंडे से चलाएं।



अवधि प्रयोग: अग्नी अस्त्र का प्रयोग केवल तीन माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

सावधानियां: मिट्टी के बर्तन पर ही सामग्री को उबल आने दें।

छिड़काव: 5 ली. अग्नी अस्त्र को छानकर

200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन या नीम के लेवचा से छिड़काव करें।

गोमूत्र

गोमूत्र कांच की शीशी में भरकर धूप में रख सकते हैं जितना पुराना गोमूत्र होगा उतना अधिक सरदारी असरकारी होगा 12 से 15 मिली लिटर गोमूत्र प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे पंप से फसलों में बुवाई के 15 दिन बाद प्रत्येक 10 दिवस में छिड़काव करने से फसलों में रोग एवं कीड़ों में प्रतिरोधी क्षमता विकसित होती जिससे प्रकोप की संभावना कम रहती है।

नीम के उत्पाद

नीम भारतीय मूल का पौधा है जिसे समूल की वेद के रूप में मान्यता प्राप्त है इससे मनुष्य के लिए उपयोगी औषधिया तैयार की जाती है तथा इसके उत्पाद फसल संरक्षण के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

नीम पत्ती का घोल : नीम की 10 से 12 किलो पत्तियां 200 लीटर पानी में 4 दिन तक भिगोये पानी हरा पीला होने पर इसे छानकर एक



एकड़ फसल पर छिड़काव करने से इल्ली की रोकथाम होती है इस ओषधि की तीव्रता बढ़ाने हेतु बेशरम, धतूरा, तंबाकू आदि के पत्तों को मिलाकर काड़ा बनाने से ओषधि की तीव्रता बढ़ जाती है और यह दवा कई प्रकार के कीड़े को नष्ट करने में उपयोगी सिद्ध है। नीम की निंबोली 2 किलो लेकर महीन पीस लें इसमें 2 लीटर ताजा गोमूत्र मिला लें इसमें 10 किलो छाछ मिलाकर 4 दिन रखें और 200 लीटर पानी में मिलाकर खेतों में फसल पर छिड़कें।

दीमक नियंत्रण के देशी उपाय

मक्का के भुट्टे से दाना निकलने के बाद, जो गिड़ियां बचती हैं, उन्हें एक मिट्टी के घड़े में इकट्ठा करके घड़े को खेत में इस प्रकार गाढ़ें कि घड़े का मुँह जमीन से कुछ बाहर निकला हो। घड़े के ऊपर कपड़ा बांध दें तथा उसमें पानी भर दें। कुछ दिनों में ही आप देखेंगे कि घड़े में दीमक भर गई है। इसके उपरांत घड़े को बाहर निकालकर गरम कर लें ताकि दीमक समाप्त हो जाये। इस प्रकार के घड़े को खेत में 100-100 मीटर की दूरी पर गड़ाएं तथा करीब 5 बार गिड़ियां बदलकर यह क्रिया दोहराएं। खेत में दीमक समाप्त हो जायेगी।

सुपारी के आकार की हींग एक कपड़े में लपेटकर तथा पत्थर में बांधकर खेत की ओर बहने वाले पानी की नाली में रख दें। उससे दीमक तथा उग्रा रोग नष्ट हो जायेगा।

मछली-सह-बतख पालन : किसानों के लिए आय का उत्तम स्रोत

- नितेश कुमार यादव ● डॉ. एस. के. शर्मा
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, उदयपुर, (राज.)
- रोहिताश यादव
केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई

एकीकृत मछली-सह-बतख पालन के लाभ

- तालाबों के पानी की सतह को बतख पालन द्वारा पूर्ण उपयोग में लाया जा सकता है।
- मछली पालन के तालाब बतख के लिए एक उत्कृष्ट वातावरण प्रदान करते हैं जो उन्हें परजीवियों के संक्रमण से बचाता है।
- बतख मछली पालन तालाब में उपस्थित कीड़े-मकोड़े का सेवन करते हैं और मछली की अंगुलिकाओं को बढ़ने में मदद करते हैं।
- मछली के तालाबों में बतख पालने से बतख आहार में प्रोटीन की मांग 2-3 प्रतिशत तक कम हो जाती है।
- प्राकृतिक खाद्य जीवों के उपज को बढ़ाने के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने वाले पानी में बतख की मल संबंधी पदार्थ सीधे पानी में चली जाती हैं।
- बतख आहार (लगभग 20-30 ग्राम बतख) का दैनिक अपशिष्ट मछली के भोजन के रूप में तालाबों में या खाद के रूप में कार्य करता है, जिसके परिणामस्वरूप मछली की उपज अधिक होती है।
- आहार की खोज में बतखों के तालाब में तैरने की क्रिया से मिट्टी के पोषण तत्व फैल जाते हैं और पानी में प्लवक उत्पादन को बढ़ावा देते हैं।
- बतख तालाब में तैरने, खेलने और पीछा करने के साथ बायो एरेटर का काम करती हैं। तालाब की सतह के लिए यह वातन की सुविधा प्रदान करते हैं।
- बतख की आहार दक्षता और शरीर के वजन में वृद्धि होती है और मछलियों द्वारा बिखरे हुए फीड का उपयोग किया जा सकता है।



● मछली पालन तालाबों के स्वच्छ वातावरण के कारण बतखों का जीवन दर तक 3.5 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।

● बतख की मल संबंधी और प्रत्येक बतख का बचा हुआ चारा मछली का उत्पादन 37.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक बढ़ा सकता है।

● बतख जलीय पौधों के अनावश्यक बढ़वार को रोकते हैं।

● बतखों के लिए कोई अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता नहीं होती है।

● यह कम निवेश के माध्यम से उच्च लाभ सुनिश्चित करता है।

बतखों का चयन

एक हेक्टेयर मछली पालन तालाब की पर्याप्त खाद के लिए आवश्यक बतखों की संख्या भी एक विचार का विषय है, पालन के लिये उपयोग में लिये जाने वाले बतख के प्रकार को देखभाल के साथ चुना जाना चाहिए क्योंकि सभी पालतू नस्लें उत्पादक नहीं हैं।

भारतीय बतख की महत्वपूर्ण नस्लें

- सिलहट मेटे
- नागेश्वरी
- बतख की हायब्रिड नस्ल, भारतीय धावक, तथा विदेशी नस्ल खाकी कैम्बेल उपयुक्त हैं।
- मछली पालन के साथ एक हेक्टेयर जल क्षेत्र

के लिए 200-300 बतख पर्याप्त मात्रा में खाद का उत्पादन करने के लिए सक्षम हैं।

● 2-4 महीने पुरानी डकलिंग को महामारी के खिलाफ सुरक्षा के रूप में आवश्यक रोग निरोधी दवाएं प्रदान करने के बाद तालाब पर रखा जाता है।

● 200-300 बतख/ हेक्टेयर का संचयन घनत्व 10,000-15,000 किग्रा खाद देता है और

तालाब में पानी की सतह पर फैला दिया जाता है।

मछली संचयन

मछली-सह-बतख पालन प्रणाली में मछली संचयन की दर से 6000 अंगुलिकाएं प्रति हेक्टेयर रखी जाती है विभिन्न प्रजातियों का अनुपात 40 प्रतिशत सतह पर रहने वाली मछलियां, 20 प्रतिशत पानी के बीच में रहने वाली (कॉलम फीडर) 30 प्रतिशत पेंदे में रहने वाली मछलियां तथा 10 से 20 प्रतिशत जलीय खरपतवार खाने वाली मछलियों को रखा जाता है।

● केवल भारतीय प्रमुख कार्पो की मिश्रित पालन में 40 प्रतिशत सतह, 30 प्रतिशत स्तंभ (कॉलम फीडर) और 30 प्रतिशत पेंदे में रहने वाली मछली की प्रजातियों के अनुपात के साथ लिया जा सकता है।

● मछली की अंगुलिकाओं का संचयन जून-सितंबर महीने में करते हैं तथा 12 महीने तक मछली पालन किया जाता है

● भारत के उत्तरी और उत्तर - पश्चिमी राज्यों में, तालाबों को मार्च के महीने मछली का संचयन किया

मछली पालन के साथ किसी भी पशुपालन को सम्मिलित किया जा सकता है जिससे कम खर्च में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, सामान्यतया मछली पालन के साथ मुर्गी, सुअर, खरगोश तथा बतख पालन काफी प्रचलित है तथा इनसे उत्पन्न खाद का प्रयोग सीधे मछली पालन में आहार के रूप में किया जाता है मछली पालन में सबसे ज्यादा खर्चा भोजन पर होता है जो कि कुल लागत का 60 प्रतिशत तक होता है अतः समन्वित मछली पालन से पशुपालन के द्वारा उत्पन्न खाद का प्रयोग करके मछली के भोजन के खर्च को कम किया जा सकता है तथा कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है मछली पालन के साथ बतख पालन में दोनों के पालन में लाभ होता है।

हर साल एक हेक्टेयर के तालाब में पुनर्नवीनीकरण किया जाता है। बतख की खाद में शुष्क पदार्थ के आधार पर 81 प्रतिशत नमी, 0.91 प्रतिशत नाइट्रोजन और 0.38 प्रतिशत फास्फेट होते हैं।

● बतख को सुबह 9 से 5 बजे तक तालाब की सतह पर रहने दिया जाता है, ताकि वे पूरे तालाब में स्वचालित रूप से अपनी मल को वितरित कर सकें।

भोजन

खुले पानी में बतख तालाब से प्राकृतिक भोजन प्राप्त करने में सक्षम हैं, लेकिन यह उनके उचित वृद्धि के लिए पर्याप्त नहीं है वजन के 1 : 2 अनुपात में किसी भी मानक संतुलित पोल्ट्री फीड और राइस ब्रान का मिश्रण 100 ग्राम/पक्षी/दिन की दर से पूरक आहार के रूप में बतख को खिलाया जा सकता है आहार को दिन में दो बार (पहला सुबह और दूसरा शाम) दिया जाता है, आहार को या तो तालाब तटबंध पर या

जाना चाहिए और सर्दी के कारण अक्टूबर-नवंबर के महीने में निकाल लिया जाना चाहिए, जो मछलियों के विकास को प्रभावित करते हैं।

● भारत के दक्षिण, तटीय और उत्तर-पूर्वी राज्यों में, जहां सर्दियों का मौसम कम होता है, तालाबों को जून-सितंबर महीनों में स्टॉक किया जाना चाहिए और 12 महीने तक मछली को पालने के बाद निकाल लिया जाना चाहिए।

बतख के अंडों का उत्पादन

बतख छह माह की आयु में अंडे देना चालू कर देती है तथा लगातार 2 से 3 साल तक अंडों का उत्पादन लिया जा सकता है जो बतख की प्रजाति, पोषण तथा प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर करता है बतख रात्रि के समय अंडे देते हैं इसलिए बतख के तालाब में रहने के समय अंडे देने की संभावना नहीं होती है।

● ऊर्जा की आपूर्ति बढ़ाने के लिए पशुओं को प्रतिदिन 100 ग्राम तक सरसों का तेल भी दिया जा सकता है।

● इस समय पशु की इलेक्ट्रोलाइट्स की आवश्यकता बढ़ जाती है इसलिए पशुओं को विरबेक कम्पनी का प्रोब्लेण्ड पावडर 50 से 100 ग्राम प्रतिदिन दिया जा सकता है। इसे देने से इलेक्ट्रोलाइट्स बैलेंस बना रहेगा।

● इसके अलावा पशुओं को चारा दाना सुबह और शाम को ठंडक के समय ही दें।

● पशुशाला में गर्मी से बचाव के पर्याप्त इंतजाम करें जैसे फर्फटा पंखे लगा दें। हो सके तो फोगर लगा दें। ये ना हो सके तो पशुओं के ऊपर पानी में भीगी टाट पट्टी ही डाल दें ताकि ठंडक बनी रहे।

● पशुओं को ज्यादा देर धूप में ना रखें।

● अगर कोई पशु हीट स्ट्रेस से ग्रसित दिखे तो तुरंत चिकित्सीय सहायता लें।

● डॉ. संजीव कुमार वर्मा

जैसे ही पशु हीट स्ट्रेस में आएगा तो वह हांफने लगेगा। उसकी जीभ बाहर आ जाएगी। सांस तेज चलने लगेंगी। गाय सामान्यतः एक मिनट में 15 से 30 बार सांस लेती है। गाय में अगर सांस लेने की रफ्तार एक मिनट में 50 से अधिक हो तो हम कहेंगे कि वह हीट स्ट्रेस का शिकार हो गई है।

गर्मी के इस मौसम में पशुओं का खान पान कैसा हो ताकि वह हीट स्ट्रेस से बचे रहे?

गर्मी के मौसम में पशु चारा खाना कम कर देते हैं जिसके कारण जितना चारा दाना वह खाते हैं उससे उनकी ऊर्जा, प्रोटीन और विटामिन मिनरल्स की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। इसलिए गर्मी के मौसम में पशुओं के खान-पान का विशेष ध्यान रखना होता है।

● गर्मी के मौसम में पानी सबसे महत्वपूर्ण

कोई पशु हीट स्ट्रेस में हैं इसे कैसे पहचानेंगे

पोषक तत्व है। इसलिए इस मौसम में पशुओं को भरपूर मात्रा में साफ और शीतल जल पिलाएं। धूप में रखा हुआ पानी कदापि ना दें।

● गर्मी के मौसम में भूसे की मात्रा कम कर दें और रातिब मिश्रण की मात्रा बढ़ा दें।

● इस समय कोशिश करें कि पशु को जो भी हरा चारा दिया जाए वह मुलायम हो।

● इस मौसम में चूंकि पशु कम चारा खायेगा इसलिए पर्याप्त ऊर्जा और प्रोटीन की आपूर्ति

सुनिश्चित करने के लिए उसके रातिब मिश्रण में ऊर्जा और प्रोटीन की मात्रा बढ़ा दें। इसके लिए

कोई भी अनाज जैसे गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा 40 किलो; चोकर या चूरी 37 किलो और कोई भी खली 20 किलो लेकर उसमें 1 किलो सादा नमक और 2 किलो विटामिन मिनरल मिक्सचर मिला लें। इस प्रकार बने रातिब मिश्रण में ऊर्जा और प्रोटीन की मात्रा अधिक होगी।



समस्या-समाधान

समस्या- मैं अपने बगीचे में चीकू लगाना चाहता हूँ चीकू कब लगाया जा सकता है, कौन सी जाति, कृपया विस्तार से बतायें?

— सुधीर वर्मा

समाधान- आप चीकू अपने बगीचे में



लगाना चाहते हैं इसे आप लगा सकते हैं चाही गई जानकारी पढ़ें और करें-

● लगाने का उपयुक्त समय जुलाई से सितम्बर माह है।

● जातियों में काली पत्ती, क्रिकेटबाल, बारहमासी, ओवल, कलकत्ता स्पेशल, पीली पत्ती, भूरी पत्ती तथा छतरी।

● मई माह में 1×1×1 मीटर के लम्बे, चौड़े तथा गहरे गड्ढे तैयार करें पौध से पौध की दूरी 8 मीटर हो।

● गड्ढों में 40 किलो गोबर की खाद, 2 किलो सिंगल सुपर फास्फेट भी मिलायें।

● अच्छी जाति के तैयार पौधे का रोपण समय से किया जाये।

● चीकू वर्षा आधारित तथा सिंचित दोनों दशा में लगाया जा सकता है सिंचाई करने पर उत्पादन अच्छा होता है।

● चीकू के पौधों के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें-

— उप संचालक उद्यानिकी

पचमढ़ी, जिला- नर्मदापुरम्

— प्रभारी शासकीय गार्डन, पचमढ़ी

जिला- नर्मदापुरम्

समस्या- मटर पर तापमान का प्रभाव 22 डिग्री सेल्सियस पर होता है यह तापमान हमारे यहां नवम्बर में आता है। मटियार दोमट भूमि में सिंचाई से पानी भर जाता है सुझाव दें?

— देवराज सिंह

समाधान - मटर पर तापक्रम के प्रभाव के विषय में आपका प्रश्न है जहां आप 22 डिग्री सेल्सियस पर चिंतित हैं जो आपके यहां नवम्बर तक आता है। मटर हो या कोई अन्य फसल

केवल तापमान के कारण उत्पादन प्रभावित नहीं होता है। तापमान के साथ-साथ भूमि की नमी का भी उतना ही असर होता है। मटर एक ठंडी एवं शुष्क जलवायु की फसल है कड़ी सर्दी तथा पाले से फूल एवं फल दोनों प्रभावित हो सकते हैं। बुआई के समय भूमिगत तापमान यदि अधिक हो तो अंकुरण प्रभावित होता है तथा पौधे कमजोर होते हैं दूसरी ओर कम तापमान से भी अंकुरण प्रभावित होता है यदि भूमिगत तापमान 15 से 22 डिग्री सेल्सियस हो तो सबसे उत्तम अंकुरण होता है। बर्शते भूमि में नमी पर्याप्त हो तुलनात्मक अधिक तापमान में बढ़वार अच्छी होती है। मटर ही नहीं रबी की प्रत्येक फसलों को लम्बी अवधि के शीत दिवस होने से उत्पादन पर सकारात्मक असर होता है। आपकी भूमि मटियार दोमट है सिंचाई पर नियंत्रण करना जरूरी होगा अनियंत्रित सिंचाई से खेत में दल-दल की स्थिति बन जाती है जिससे पौधों की दैहिक क्रिया पर असर होता है बढ़वार गति मंद पड़ जाती है सिंचाई की क्यारी पद्धति या स्प्रिंकलर से सिंचाई करना अधिक अच्छा रहेगा। मटर बुवाई का उत्तम समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर माना गया है आप नवम्बर में लगाये पानी की व्यवस्था तो आपके पास उपलब्ध ही है।

समस्या- हमें जानकारी देने की कृपा करें कि गरकिन की फसल हमारे यहां हो सकती है या नहीं रायपुर के आसपास अधिक हो रही है लगाने का उपयुक्त समय क्या है?

— नारायण पवार

समाधान- आपने गरकिन के विषय में जानकारी चाही है। गरकिन कट्टवर्गीय फसल खीरा - ककड़ी के जैसे ही एक है जो खाने में स्वादिष्ट तथा खीरा जैसी है। पौष्टिक खीरा से करीब चौथाई छोटी-छोटी होती है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में स्थानीय तौर पर इसे लगाया जाता है। रायपुर में ज्यादा प्रचलित है आपके क्षेत्र में इसे सफलता से लगाया जा सकता है। निकट भविष्य में कृषक जगत में इनके बारे में विस्तार से जानकारी का प्रकाशन प्रस्तावित है।

समस्या - क्या बथुआ की खेती भी की जा सकती है क्योंकि इसके औषधि गुणों के कारण उपयोगी हैं नई जाति हो तो बतायें?

— रघुकुल राठौर

समाधान- आपने बिल्कुल ठीक लिखा है। गेहूं तथा अन्य रबी फसलों के साथ उगने वाला



बथुआ में अनेकों औषधि गुण हैं इसमें विटामिन ए एवं सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है आंतों

तथा कब्ज रोगों में बहुत लाभदायक होता है आप चाहें तो थोड़े क्षेत्र में बथुआ लगा सकते हैं इसका उपयोग सब्जी-रायता में भी होता है। बवासीर रोग में भी लाभकारी पाया गया है।

● सभी प्रकार की भूमि में पैदा किया जा सकता है। बालुई दोमट भूमि सबसे अच्छी होती है। ● खेत की तैयारी अन्य रबी फसलों की तरह की जाये। ● बुवाई सितम्बर के आखिरी सप्ताह से लेकर मार्च प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। ● एक से डेढ़ किलो बीज प्रति हेक्टर पर्याप्त होता है। बीज को गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई की जा सकती है। ● कतार से कतार 30 सेमी।

● इसकी जाति पूसा बथुआ 1 इसकी पत्तियां बैंगनी हरी पत्तियां 10.5 सेमी तथा चौड़ाई 3 सेमी होती है। तना भी बैंगनी रंग का होता है पहली कटाई बुआई को 40-50 दिन बाद की जा सकती है। ● यूरिया 50-60 किलो खड़ी फसल में 2-3 भागों में बांटकर टापड्रेसिंग करें।

● बीज आने के पहले कटाई बंद कर दें।

समस्या- मैं अंगूर लगाना चाहता हूँ क्या हमारे क्षेत्र में पैदा किया जा सकता है। विधि भी लिखें? — रामाजी पाटीदार

समाधान- आज से दो-तीन दशक पहले अंगूर की खेती केवल महाराष्ट्र तक ही सीमित



थी परंतु खेती को लाभकारी बनाने के प्रयास में नगदी फसलों के विस्तार में गति आई और अंगूर जैसी फसल भी हमारे प्रदेश में सफलता से आपके यहां भी लगाई जा सकती है। आप निम्न तकनीकी अपनारें।

● पौध लगाने का उचित समय नवम्बर से जनवरी होता है। ● जल्दी ही खेत में 60×60×60 मीटर के लम्बे, चौड़े तथा गहरे गड्ढे तैयार करा लें किस्मों के अनुरूप गड्ढों की दूरी 3×3 मीटर से लेकर 7×3 मीटर तक रखी जा सकती है।

● तारों से इसकी बेल को चढ़ाने के लिये मंडप तैयार किया जाता है पड़ोस के जिले रतलाम में स्वयं जाकर इनको देखें तथा प्रशिक्षण भी लें क्योंकि फलन हेतु बेलों को विशेष स्थिति में कांटा/छांटा जाता है।

● प्रत्येक गड्ढों में 40 किलो गोबर की खाद, 1 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 500 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश भरें।

कृषक जगत

बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✓ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम _____
ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____
जिला _____ फोन/मोबा. _____
कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____
संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी आर्डर रसीद क्र. _____ बी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100, 2554864

- डॉ. दीपक हरि रानडे
- डॉ. मनोज कुमार कुरील • डॉ. स्मिता अग्रवाल

स्वाद और सुगंध में विशेष

स्पीयर मिंट की पत्तियों का स्वाद हल्का मीठा, ताजगी से भरा और मन को शीतल करने वाला होता है। इसका प्राकृतिक सुगंध मन और मस्तिष्क को ताजगी देती है। चाय, हर्बल शरबत, सलाद और चटनी में इसका उपयोग खाने का स्वाद ही नहीं बढ़ाता, बल्कि भोजन को पचाने में भी मदद करता है। ताजगी के अलावा, इसकी सुगंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। तनाव और थकान के समय इसकी खुशबू से मस्तिष्क को ताजगी मिलती है, ध्यान केंद्रित करना आसान होता है और मानसिक थकान कम होती है।

औषधीय महत्व

सुपारी पुदीना सिर्फ स्वाद और सुगंध तक सीमित नहीं है। इसके पत्तों और तेल में कई औषधीय गुण मौजूद हैं, जो इसे आयुर्वेद और हर्बल उपचार में अनमोल बनाते हैं।

पाचन में सहायक

पुदीना पेट की गड़बड़ियों को दूर करता है। यह भूख बढ़ाने, अपच कम करने और गैस और ब्लोटिंग को नियंत्रित करने में मदद करता है। इसके ताजे पत्तों से बनी चाय या शरबत पेट को हल्का और आरामदायक महसूस कराता है।

सर्दी, खाँसी और श्वसन स्वास्थ्य

सुपारी पुदीना सर्दी और खाँसी में राहत देता है। इसमें प्राकृतिक टंडक और ताजगी होती है, जो गले की जलन कम करती है और श्वसन मार्ग को आराम देती है। हर्बल चाय या पुदीना अर्क गले को शांत करता है और सर्दियों में शरीर को गर्म रखता है।

त्वचा और सौंदर्य में उपयोग

पुदीना का तेल और अर्क त्वचा पर लगाने से ताजगी और टंडक मिलती है। यह मुँहासों और जलन को कम करता है, त्वचा को हाइड्रेट करता है और उसे स्वस्थ बनाता है। साबुन, क्रीम और फेस पैक में पुदीना का उपयोग त्वचा की चमक बढ़ाने और उसे जीवंत रखने के लिए किया जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य और ताजगी

स्पीयर मिंट मानसिक थकान और तनाव को

गुणों से भरपूर सुपारी पुदीना प्राकृतिक ताजगी और औषधीय शक्ति



सुपारी पुदीना (स्पीयर मिंट Mentha spicata)
अपने ताजगी और सुगंध के कारण सदियों से हमारे जीवन का हिस्सा रहा है। इसे भारतीय और विश्वभर के रसोईघर, आयुर्वेदिक दवाओं और हर्बल उपचारों में प्रमुखता से उपयोग किया जाता है। इसकी नुकीली, ताजगी से भरी पत्तियाँ न केवल स्वाद और खुशबू बढ़ाती हैं, बल्कि शरीर और मस्तिष्क के लिए अद्भुत लाभ भी प्रदान करती हैं। स्पीयर मिंट का नाम इसके पत्तियों के नुकीले आकार (spear-like) और तेज़ खुशबू से जुड़ा है। इसे ताजगी, शीतलता और स्वास्थ्य का प्रतीक भी माना जाता है। आज यह न सिर्फ खाद्य और पेय पदार्थों में, बल्कि सौंदर्य प्रसाधन, दंत-मंजन, तेल और इत्र उद्योग में भी अपनी जगह बना चुका है। यह पौधा कृषि महाविद्यालय, खंडवा में लगा हुआ है।

कम करता है। इसकी ताजगी से भरी सुगंध मस्तिष्क को उत्तेजित करती है, एकाग्रता बढ़ाती है और मूड को बेहतर बनाती है। सुबह के समय पुदीना का सेवन या ताजे पत्तों की खुशबू मानसिक ताजगी के लिए लाभकारी होती है।

एंटीऑक्सीडेंट और डिटॉक्स गुण

सुपारी पुदीना में एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को हानिकारक मुक्त कणों से बचाते हैं। यह शरीर को डिटॉक्स करने, ऊर्जा बढ़ाने और इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मदद करता है।

संक्षेप में

स्पीयर मिंट हल्का, मीठा और सुगंधित होता है, जिससे यह रोजमर्रा के खाने, चाय और सौंदर्य उत्पादों में अधिक प्रिय है। पेपरमिंट (सामान्य पुदीना) में मेंथोल अधिक होने के कारण यह औषधीय उत्पादों और तेल उद्योग के लिए अधिक उपयोगी है।

खाद्य और औषधीय उपयोग

स्पीयर मिंट का उपयोग विविध तरीकों से किया जाता है।

ताजा पत्तियाँ : चाय, शरबत, सलाद, चटनी और

डेसर्ट में ताजगी और स्वाद बढ़ाने के लिए।

सूखी पत्तियाँ : पाउडर या मसाले के रूप में इस्तेमाल।

तेल (मेंथोल युक्त) : साबुन, क्रीम, इत्र, दंत-मंजन और हर्बल तेल में।

तैयार उत्पाद : पुदीना पेस्ट, चाय, पुदीना बाम, कैंडल और हर्बल ड्रिंक।

स्पीयर मिंट की बहुपयोगिता इसे केवल रसोई तक सीमित नहीं रहने देती, बल्कि यह औषधीय और सौंदर्य उद्योग में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जीवनशैली में महत्व

स्पीयर मिंट के सेवन से न केवल स्वास्थ्य लाभ होते हैं, बल्कि यह जीवनशैली में ताजगी और ऊर्जा भी जोड़ता है। सुबह-सुबह पुदीना वाली हर्बल चाय या शरबत लेने से दिनभर ताजगी बनी रहती है। थकान और तनाव के समय इसकी सुगंध मस्तिष्क को तरोताजा कर देती है। इसके अलावा, पुदीना की खुशबू और स्वाद मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। यह ध्यान और मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

सुपारी पुदीना के फायदे एक नजर में

- पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है
- सर्दी-खाँसी और श्वसन स्वास्थ्य में सहायक
- त्वचा को स्वस्थ, हाइड्रेट और चमकदार बनाता है
- मानसिक तनाव और थकान कम करता है
- एंटीऑक्सीडेंट और डिटॉक्स गुणों से भरपूर
- सौंदर्य प्रसाधन, तेल और हर्बल उत्पादों में बहुपयोगी
- स्वाद और सुगंध से भोजन और पेय पदार्थों में ताजगी

स्पीयर मिंट और सामान्य पुदीना में अंतर

स्पीयर मिंट (Mentha spicata) और सामान्य पुदीना (Mentha piperita या पेपरमिंट) दोनों ही लोकप्रिय हर्बल पौधे हैं, लेकिन इनके स्वाद, खुशबू और उपयोगिता में महत्वपूर्ण अंतर है।

विशेषता	स्पीयर मिंट (सुपारी पुदीना)	सामान्य पुदीना (पेपरमिंट)
सुगंध और स्वाद	हल्का मीठा, ताजगी से भरा, नर्म और सुगंधित	तीखा, तेज और मसलदार स्वाद, हल्का कड़वा
तेल में मेंथोल की मात्रा	कम मेंथोल (90.5-1%)	अधिक मेंथोल (91.5-2%)
पत्तियों का आकार	लंबी, नुकीली और सपाट	मोटी, गहरी हरी और अक्सर मरोड़दार
उपयोगिता	हर्बल चाय, सलाद, चटनी, सौंदर्य प्रसाधन, हल्के हर्बल उत्पाद	दंत-मंजन, इत्र, तेल, औषधीय उत्पाद और टंडी हर्बल ड्रिंक
स्वास्थ्य लाभ	पाचन सुधार, ताजगी, त्वचा और मानसिक स्वास्थ्य	श्वसन स्वास्थ्य, सर्दी-खाँसी, टंडक और दर्द निवारण
सुगंध का असर	हल्का और मधुर, मानसिक ताजगी के लिए बेहतर	तेज़ और तीखा, तनाव और सिरदर्द में सहायक

नाश्ते से बच्चों का प्रदर्शन अच्छा

पोषक आहार लेना जरूरी

नाश्ते में बच्चों को कुछ भी देना अक्लमंदी नहीं है। सिर्फ मिठाई या चिप्स जैसे खाद्य वस्तुओं से कोई फर्क नहीं पड़ता। इसकी बजाय पोषक तत्वों से युक्त भोजन दिया जाना चाहिए। शोध में ज्यादातर बच्चों में ऐसा ही पाया गया।

सीखने की क्षमता में सुधार

- स्कूल से पहले नाश्ते से पढ़ने-सीखने की क्षमता में दिखा गजब का सुधार।
- शोधकर्ताओं ने कहा, नाश्ता करने वाले बच्चों ने दोगुने अंक पाए।

सुबह का नाश्ता सेहत के लिए फायदेमंद तो है ही, लेकिन स्कूल जाने वाले बच्चों के लिये यह सोने पर सुहागा से कम नहीं। दरअसल, ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने कहा है कि स्कूल जाने से पहले नाश्ता करने वाले बच्चे पढ़ाई-लिखाई में ज्यादा बेहतर प्रदर्शन करते हैं। कार्डिफ यूनिवर्सिटी के

शोधकर्ताओं ने पाया कि खाली पेट पढ़ने-सीखने वाले बच्चों की तुलना में नाश्ता कर कक्षाओं में जाने वाले बच्चों ने परीक्षाओं और टेस्ट में दोगुने के करीब अंक पाए।

शोधकर्ताओं ने इस आधार पर कहा कि ब्रिटिश स्कूलों में सरकार की ओर से मिड डे मील जैसी योजना बंद करने का असर



बच्चों को सीखने की क्षमता पर पड़ सकता है। इस तरह स्कूल बजट में कमी बच्चों के अकादमिक स्तर पर उलटा असर डाल

सकती है। शोधकर्ता हन्ना लिटिलकॉट ने कहा कि नाश्ता करके जाने से स्कूल में बच्चों की एकाग्रता बेहतर रहती है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि 11 बजे के आसपास जब छात्रों का इम्तहान लिया गया तो वे बिना नाश्ता करके परीक्षा देने वालों की तुलना में दोगुना अंक पाए। उन्होंने कहा कि फल, सब्जियों के साथ मिठाई व चॉकलेट जैसी खाद्य वस्तुओं का निश्चित तौर पर शैक्षिक स्तर पर सकारात्मक असर पड़ा। बच्चे कम बीमार पड़े, स्कूल में उनका मन भी लगा और क्लास में सीखी हुई बातों को लेकर उनकी याददाश्त भी बेहतर हुई। लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन में समाजशास्त्र के प्रोफेसर क्रिस बोनेल ने कहा कि अब ब्रिटेन के ज्यादातर स्कूल बच्चों को नाश्ते की पेशकश करते हैं। इससे बच्चों की सेहत के साथ शैक्षिक प्रदर्शन को भी बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

पाक्षिक पंचांग

3 से 16 नवम्बर 2025

विक्रम संवत् 2082

कार्तिक शुक्ल 13 से आगहन कृष्ण 12 तक

दि.	माह	वार	तिथि/त्यौहार
3	नवम्बर	सोम	कार्तिक शुक्ल 13 प्रदोष व्रत, पंचक
4	नवम्बर	मंगल	14 बैकुंठ चतुर्दशी
			पंचक 11.20 दिन तक
5	नवम्बर	बुध	15 स्ना.दा. व्रत पूर्णिमा
6	नवम्बर	गुरु	अगहन कृष्ण 1
7	नवम्बर	शुक्र	2
8	नवम्बर	शनि	3 गणेश चतुर्थी
9	नवम्बर	रवि	4
10	नवम्बर	सोम	5/6
11	नवम्बर	मंगल	7
12	नवम्बर	बुध	8 काल भैरवाष्टमी
13	नवम्बर	गुरु	9
14	नवम्बर	शुक्र	10
15	नवम्बर	शनि	11 उत्पन्ना एकादशी
16	नवम्बर	रवि	12

भेड़ों में फैल रही संक्रामक बीमारी के त्वरित उपचार और बचाव में

किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं की जाएगी बर्दाश्त : पशुपालन मंत्री

जयपुर। पशुपालन, डेयरी और गोपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने पाली एवं जालौर जिलों में भेड़ों में फैल रही संक्रामक बीमारी की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल विशेष चिकित्सा टीमें भेजी जाएं तथा बीमार पशुओं का समुचित उपचार सुनिश्चित किया जाए। श्री जोराराम कुमावत ने यह भी बताया है कि पाली और जालौर जिले में हाल ही के दिनों में भेड़ों में फैल रही संक्रामक बीमारी की रोकथाम एवं निदान के लिए पशुपालन विभाग द्वारा विशेष कार्ययोजना के तहत त्वरित कार्रवाई की जा रही है।

पशुपालन मंत्री ने बताया कि जालौर जिले के आहोर नोडल क्षेत्र में अधिक संख्या में भेड़ें प्रभावित हुई हैं शेष भाग में भी कुछ छिटपुट मामले सामने आए हैं। आहोर में संक्रमित भेड़ों के सर्वे और उपचार के लिए 40 सदस्यों के कुल 12 दलों का गठन किया गया है जो लगातार सर्वे और उपचार के कार्य में लगे हैं। संक्रमित पशुओं के ब्लड सैंपल तथा नेजल स्वेब लकर परीक्षण के लिए भेजा गए हैं। अब तक आहोर के विभिन्न गांवों में नौ हजार से अधिक भेड़ों का सर्वे हो चुका है। जिले के अन्य भागों में भी सभी एहतियाती उपाय किए जा रहे हैं और संक्रमित पशुओं को अन्य पशुओं

से क्रैरेंटाइन किया गया है जिससे बीमारी के फैलाव को रोका जा सके। पशुपालकों को भी आवश्यक परामर्श एवं सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। श्री कुमावत ने बताया कि पाली जिले में भी कुछ घटनाएं सामने आई हैं जिनका संज्ञान लेकर उपचार चालू कर दिया गया है। पाली के चाणोद गांव से सैंपल लेकर जांच के लिए भिजवाया गया है। आगे स्थिति न बिगड़े, इसके लिए संबंधित अधिकारियों को पाबंद कर दिया गया है। वहां अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि तत्काल दलों का गठन कर भेड़ों में फैली बीमारी का सर्वे करवाकर आवश्यकतानुसार अविचल उपचार शुरू करवाएं।

श्री कुमावत ने कहा कि राज्य सरकार पशुधन की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति पूरी तरह संवेदनशील है। उन्होंने बताया कि दोनों जिलों में पशु चिकित्सकों की टीमों को गांव-गांव जाकर पशुओं की जांच करने, सैंपल लेने के काम को तेज करने और जागरूकता शिविर आयोजित करने के भी निर्देश दिए गए हैं।

श्री कुमावत ने कहा कि इस संबंध में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त दवाइयों व संसाधनों की आपूर्ति तत्काल की जाएगी। उन्होंने पशुपालकों से भी अपील की है कि वे अपने पशुओं का समय-समय पर टीकाकरण कराएं, बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें तथा किसी भी प्रकार के संक्रमण की स्थिति में नजदीकी पशु चिकित्सालय से तत्काल संपर्क करें।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, शेथर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जन्मेटर आदि
 - बीज ■ औषधीय फसल
- विज्ञापन दर** - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
 - अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण

साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेल्स, तीर्थ यात्राएँ, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat @krishakjagatindia @krishak_jagat

पीएम-कुसुम योजना से ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम

मुख्यमंत्री के निर्देशन में कोलाड़ा एवं रामसिंहपुरा में 2.94 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा प्लांट स्थापित

250 से अधिक कृषक परिवारों को सिंचाई के लिए मिलेगी सौर ऊर्जा आधारित बिजली

जयपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शी ऊर्जा नीति और मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में राजस्थान अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में देश का सिरमौर राज्य बन चुका है। प्रधानमंत्री कुसुम योजना के माध्यम से राज्य में सौर ऊर्जा उत्पादन ने नई ऊँचाइयाँ छू ली हैं, जिसमें सवाई माधोपुर जिला भी इस राष्ट्रीय ऊर्जा क्रांति का सशक्त

इसी क्रम में, सवाई माधोपुर सर्किल के रामसिंहपुरा 33/11 केवी सब-स्टेशन क्षेत्र में 1.12 मेगावाट क्षमता का विकेंद्रित सौर संयंत्र भी प्रारंभ किया गया है, कोलाड़ा एवं रामसिंहपुरा में 2.94 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना से लगभग 250 से अधिक कृषक परिवारों को सिंचाई के लिए दिन के समय सौर ऊर्जा आधारित बिजली उपलब्ध होगी।

सवाई माधोपुर जिले में पीएम-कुसुम योजना के कंपोनेंट ए एवं सी दोनों घटकों में सराहनीय प्रगति हो रही है। सभी संयंत्रों की स्थापना उपरांत किसानों को सिंचाई के लिए दिन में बिजली उपलब्ध हो सकेगी एवं कृषि उत्पादन में भी वृद्धि होगी। वर्तमान में सवाई माधोपुर जिले में कुसुम योजना कंपोनेंट-ए के

तहत अब तक कुल 3 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र चालू हैं, जबकि अतिरिक्त 3.67 मेगावाट क्षमता के संयंत्रों पर कार्य प्रगति पर है। जिले के सारसोप में 1.42 मेगावाट एवं कोलाड़ा में 2.25 मेगावाट उत्पादन क्षमता के संयंत्रों का स्थापना कार्य अंतिम चरण में है।

किसानों के लिए लाभ का नया सूर्योदय प्रधानमंत्री कुसुम योजना ने देश भर में किसानों के जीवन में नई ऊर्जा का संचार किया है। इस योजना से किसान अब बिजली व डीजल निर्भरता से मुक्त होकर सौर ऊर्जा का उपभोग कर दिन के समय सिंचाई कर रहे हैं। इससे न केवल उत्पादन लागत में कमी आई है, बल्कि अतिरिक्त आय का मार्ग भी खुला है।



सहभागी है।

जिले के बौली उपखण्ड स्थित कोलाड़ा 33/11 केवी सब-स्टेशन क्षेत्र में हाल ही में 1.82 मेगावाट क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है। यह राज्य का 956वां सौर संयंत्र है, जिससे सवाई माधोपुर जिले की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। राजस्थान ने पीएम-कुसुम योजना के कंपोनेंट-ए एवं कंपोनेंट-सी के अन्तर्गत अब तक 2,000 मेगावाट क्षमता से अधिक के विकेंद्रित सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर देश में एक नई मिसाल कायम की है। योजना के कंपोनेंट-ए में राजस्थान देश में प्रथम स्थान तथा कंपोनेंट-सी में महाराष्ट्र एवं गुजरात के बाद तीसरे स्थान पर पहुंच गया है।

कृषक जगत राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर

78 वर्षों में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक

- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि

- ⇒ वार्षिक रु. 600/-
- ⇒ दो वर्ष रु. 1000/-
- ⇒ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह □ भोपाल □ जयपुर □ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजे। (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें)।

नाम
ग्रामपो.
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें :
वि.ख. तह.
जिला पिन राज्य
शिक्षा भूमि उम्र
ट्रेक्टर/मॉडल फोन/मो.
ई-मेल
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर **6262166222**
Online Payment- SBI/A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org

जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952

रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो. : 9826255862

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864

नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें



- शशिकांत त्रिवेदी, वरिष्ठ पत्रकार,
मो.: 9893355391

देश में खरीफ क्षेत्र के 58 प्रतिशत में अतिरिक्त वर्षा

सन् 2025 में, भारत में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव स्पष्ट हैं। मौसम विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर में असामान्य वर्षा ने मध्य प्रदेश में 71 मिमी तक बारिश दर्ज की, जिससे बाढ़ और फसल क्षति हुई। पूरे देश में खरीफ क्षेत्र के 58 प्रतिशत में अतिरिक्त वर्षा दर्ज हुई, जिससे चावल, मक्का और सोयाबीन जैसी फसलों को नुकसान पहुंचा। अक्टूबर में औसत से अधिक बारिश ने कटाई के निकट फसलों को प्रभावित किया, जिससे 3.2 मिलियन हेक्टेयर भूमि प्रभावित हुई है।

सन् 2024 के डेटा के आधार पर, 2025 में भी लगभग समान परिस्थितियां हैं। जलवायु परिवर्तन से औसत तापमान 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ने की संभावना है, जिससे प्रमुख फसलों में 10 प्रतिशत तक उत्पादन हानि हो सकती है। 2024-25 में, बदलते मौसम से 10,000 पशु हानि और लाखों किसानों को नुकसान हुआ।

किसानों की आय प्रभावित

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के तहत 78.41 करोड़ आवेदनों को कवर किया गया, जिसमें रु. 1.83 लाख करोड़ क्लेम का भुगतान हुआ, लेकिन देरी एक बड़ी समस्या है। अध्ययनों से पता चलता है कि क्लेम सेटलमेंट में 3-14 महीने लगते हैं, जिससे किसानों की आय प्रभावित होती है।

खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ रही

भारत में असामान्य मौसम—जैसे बंगाल की खाड़ी में गहरा अवदाब और अरब सागर

भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की आधी से अधिक आबादी का पोषण करता है, जलवायु परिवर्तन और बदलते मौसम के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। राष्ट्रीय इस तरह का बीमा वर्षा, तापमान या आर्द्रता जैसे पूर्व निर्धारित मौसम मापदंडों पर आधारित भुगतान प्रदान करता है। इसे पैरामीट्रिक बीमा भी कहते हैं। इसमें किसानों को नुकसान की भरपाई के लिए कुछ जल्दी मुआवजा मिलने की संभावना रहती है। पारंपरिक क्षतिपूर्ति-आधारित मॉडल से अलग, जहां नुकसान मूल्यांकन में 1-2 साल की देरी होती है, पैरामीट्रिक बीमा कुछ दिनों में मोबाइल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भुगतान कर सकता है, जैसा केन्या और फिलीपींस में देखा गया है।

में डिप्रेशन—फसल चक्र को बाधित कर रहा है। माराठवाड़ा जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्रों में बाढ़ से लाखों हेक्टेयर फसलें नष्ट हो रही हैं, जिससे खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ रही है।



पैरामीट्रिक बीमा इस जोखिम को कम कर सकता है, लेकिन चुनौतियां हैं: अभी भारत में लगभग 30 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में ही मौसम स्टेशन हैं। ऐसी स्थिति में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP)

और डिजिटल साक्षरता अभियान आवश्यक हैं। सरकार नवाचार और प्रौद्योगिकी कोष (जिसे फिएट भी कहते हैं) से नवाचार को बढ़ावा दे रही है, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित बीमा को और ठोस विकल्प बना सकता है।

824.77 करोड़ का एक अलग कोष

हाल ही में कुछ खबरें आई हैं कि नाबार्ड पैरामीट्रिक बीमा पर कुछ संस्थाओं से बातचीत कर रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से वास्तविक समय का डेटा, सेंसर और मौसम स्टेशन से की मदद से मौसम के कारण खेती में हुए नुकसान का वास्तविक आकलन किया जा सकता है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने इस साल दो फसल बीमा योजनाओं—प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना को 2025-26 तक एक और वर्ष के

भारत में मौसम-आधारित कृषि बीमा सब फसलों पर लागू हो

लिए बढ़ा दिया और तकनीक के जरिये प्रमुख योजनाओं का लाभ किसानों को देने के लिए रु. 824.77 करोड़ का एक अलग कोष बनाया। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

कुल मिलाकर, पैरामीट्रिक बीमा कृषि क्षेत्र को जलवायु अनुकूल बनाने का एक क्रांतिकारी कदम है, लेकिन बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए नीतिगत समर्थन और किसान शिक्षा जरूरी है। 2025 में, चरम मौसम की बढ़ती घटनाएं इसकी तत्काल आवश्यकता रेखांकित करती हैं, अन्यथा कृषि उत्पादन में 5-10 प्रतिशत की गिरावट से खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।



और पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना को 15वें वित्त आयोग की अवधि के अनुरूप बनाने के लिए बढ़ा दिया गया है। इन पर सन् 2021-22 से 2025-26 तक रु. 69,515.71 करोड़ खर्च होना है। जबकि 2020-21 से 2024-25 के लिए यह खर्च रु. 66,550 करोड़ था।

महिंद्रा फार्म मशीनरी ने नया ग्राउंडनट थ्रेशर लॉन्च किया

मुंबई (कृषक जगत)। दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर विनिर्माता और भारत के सबसे बड़े कृषि उपकरण निर्माताओं में से एक, महिंद्रा एंड महिंद्रा ने एक नया मूंगफली थ्रेशर लॉन्च किया है। उपयोगकर्ता के अनुकूल और किफायती डिज़ाइन वाले इस नए मूंगफली थ्रेशर को चलाना आसान है। ट्रैक्टर से चलने वाला यह नया थ्रेशर प्रेसिजन (सटीक) थ्रेशिंग के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो मूंगफली को उनकी फलियों से ठीक से अलग करता है।

गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के मूंगफली किसानों के लिए उपयुक्त, महिंद्रा का यह नया मूंगफली थ्रेशर आकार में छोटा, लेकिन दक्ष और मजबूत है। इसका एर्गोनॉमिक डिज़ाइन किसानों के रोज़मर्रा के काम आसानी से करने और मजदूरों पर निर्भरता कम कर बचत करने में मदद करता है। मूंगफली की फसल की कटाई के लिए सुविधाजनक समय-सारिणी सुनिश्चित करता है, जिससे किसान अपनी सुविधा के अनुरूप कटाई और थ्रेशिंग कर सकते हैं। महिंद्रा का नया मूंगफली थ्रेशर अनाज की गुणवत्ता और नुकसान को वास्तविक समय पर निगरानी की सुविधा प्रदान करता है, ताकि



तत्काल हस्तक्षेप किया जा सके और बर्बादी तथा खेत में छूट जाने वाले अवशेष को कम किया जा सके। यह नया थ्रेशर जल्दी कटाई और देर से थ्रेशिंग की जोखिम को कम करने में मदद करता है।

महिंद्रा फार्म इक्विपमेंट बिजनेस की वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और बिजनेस हेड (व्यापार प्रमुख) - फार्म मशीनरी एवं प्रिसिजन फार्मिंग, डॉ. अनुषा कोथंदरमन ने नए लॉन्च पर अपनी

टिप्पणी में कहा, 'महिंद्रा को नया मूंगफली थ्रेशर लॉन्च करते हुए बेहद खुशी हो रही है। यह एक ऐसा उत्पाद है, जिसकी कल्पना मूंगफली किसानों के साथ मिलकर एक ऐसे मशीनीकरण समाधान के लिए की गई है जो समय पर कटाई के लिए सुविधाजनक है, और मूंगफली की फसल की मूल्य श्रृंखला में और वृद्धि करता है। 30 से ज्यादा थ्रेशरों की हमारी बढ़ती श्रृंखला के साथ, यह लॉन्च हमारे कृषि मशीनरी व्यवसाय के जरिये नवोन्मेष और कृषि सशक्तिकरण के हमारे निरंतर प्रयास को दर्शाता है। नया थ्रेशर गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश स्थित विशिष्ट महिंद्रा फार्म मशीनरी आउटलेट और चुनिंदा महिंद्रा ट्रैक्टर डीलरशिप पर खरीदने के लिए उपलब्ध है।'

राज्यपाल ने किया कृषि विश्वविद्यालय में संवाद

उत्कृष्ट शोधकर्ता, उद्यमी एवं वैज्ञानिक तैयार करें कृषि विश्वविद्यालय : राज्यपाल



जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री हरिभाऊ बागडे ने कृषि विश्वविद्यालय, कोटा में संचालित विषय, छात्रों की वर्तमान स्थिति, नामांकन व्यवस्था, शैक्षणिक गुणवत्ता एवं संस्थागत व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा की।

राज्यपाल श्री बागडे ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों को केवल डिग्री प्रदान करने तक सीमित न रहकर, भविष्य के कृषि वैज्ञानिक, शोधकर्ता, उद्यमी एवं राष्ट्रनिर्माता तैयार करने की दिशा में कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय छात्रों को एक ऐसी योग्य मानव संपदा (एसेट) के रूप में तैयार करें जो समाज, राष्ट्र एवं संपूर्ण मानवधारा के हित में योगदान दे

सके। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को बौद्धिक रूप से सशक्त बनाते हुए समाज, राष्ट्र एवं विश्व के लिए एक मूल्यवान संपत्ति के रूप में तैयार किया जाए। उन्होंने कहा कि छात्रों की ऊर्जा एवं ज्ञान का लाभ संपूर्ण मानव समाज तक पहुँचना चाहिए।

श्री बागडे ने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार शिक्षा में प्रगति की समीक्षा की तथा विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शिक्षा, अनुसंधान, प्रसार, मानव संसाधन विकास, प्रशासनिक एवं वित्तीय सुधार, आधारभूत संरचना विकास, हरित पहल, उद्यमिता एवं स्टार्टअप आदि सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि कृषि को राष्ट्र की आर्थिक एवं सामाजिक

मजबूती का आधार माना जाता है, ऐसे में युवाओं का कृषि एवं कृषि-आधारित व्यवसायों की ओर रुझान बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।

राज्यपाल ने निर्देश दिए कि कृषि विश्वविद्यालय में अधिक से अधिक छात्रों का नामांकन सुनिश्चित किया जाए, ताकि कृषि शिक्षा का लाभ अधिकतम युवाओं तक पहुँच सके। उन्होंने शिक्षकों एवं छात्रों के अनुपात की समीक्षा करते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण कृषि शिक्षा के प्रसार से राष्ट्र को मजबूत कृषि-शक्ति के रूप में स्थापित किया जा सकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय से संबद्ध 13 संस्थानों (9 सरकारी एवं 4 निजी) की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि यदि कोई संस्थान सम्बंधता हेतु निर्धारित मानकों पर खरी नहीं उतरे तो विश्वविद्यालय को ऐसे संस्थानों के विरुद्ध कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय को प्लेसमेंट सेल स्थापित करने के निर्देश दिए, जहाँ इसका रिकॉर्ड रखा जाए कि पूर्व छात्र निजी, सरकारी एवं अन्य क्षेत्रों में कितनी प्रगति कर रहे हैं। राज्यपाल ने प्रतिवर्ष 'अलुमनाई मीट' आयोजित करने का सुझाव दिया, ताकि सफल पूर्व छात्र वर्तमान छात्रों को प्रेरित कर सकें। साथ ही, उन्होंने विदेशों व बड़े शहरों में कार्यरत पूर्व छात्रों को वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियों से जोड़ने की बात कही।

7.63 लाख किसानों को खरीफ फसल के नुकसान पर कृषि आदान-अनुदान स्वीकृत

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार कृषक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। इसी क्रम में राज्य सरकार ने प्राकृतिक आपदा से प्रभावित किसानों को बड़ी राहत दी है। खरीफ फसल वर्ष 2025 के दौरान अतिवृष्टि से प्रभावित 7.63 लाख किसानों के लिए कृषि आदान अनुदान स्वीकृत किया है।

निर्णय के अनुसार अतिवृष्टि से 33 प्रतिशत से अधिक फसल नुकसान होने पर 6 जिलों की 43 तहसीलों के 3777 गांव गिरदावरी के आधार पर आपदा प्रभावित घोषित किए गए हैं। इन 3777 गांवों में लगभग 7.63 लाख किसानों को आपदा राहत कोष से कृषि आदान अनुदान वितरण के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई है।

इन 3777 गांवों में झालावाड़ के 1597, धौलपुर के 42, बूंदी के 534, भरतपुर के 349, डीग के 58 और टोंक के 1197 गांव शामिल हैं। शेष जिलों में फसल नुकसान की फाइनल रिपोर्ट तैयार की जा रही है। रिपोर्ट प्राप्त होते ही अन्य जिलों की स्वीकृतियां भी जारी की जाएंगी।

केन्द्रीय पशुपालन अपर सचिव ने पशुपालन विभाग के साथ बैठक की

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन एक इंटीग्रेटेड आईटी इकोसिस्टम : डॉ. जोशी



जयपुर। केन्द्रीय मत्स्य, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन व डेयरी विभाग की अपर सचिव डॉ. वर्षा जोशी ने सचिवालय स्थित सचिवालय में पशुपालन विभाग, राजस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक लेकर विभागीय योजनाओं, केंद्र प्रायोजित कार्यक्रमों तथा राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की।

अपर सचिव ने कहा कि राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन एक इंटीग्रेटेड आई टी इकोसिस्टम है। इसका मुख्य उद्देश्य तकनीक समर्थित प्रणाली के माध्यम से विभाग की योजनाओं, लाभ प्रक्रिया, प्रगति की पशुपालकों को बेहतर जानकारी उपलब्ध कराना है जिससे कम समय में वांछित परिणाम मिल सके। राजस्थान जैसे पशुधन प्रधान राज्य में एनडीएलएम के माध्यम से पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने, पशुपालकों की आय बेहतर करने और पशुओं तथा पशु उत्पादों को ट्रेस करने की क्षमता वृद्धि में बहुत मदद मिलेगी। डॉ. जोशी ने अधिकारियों को क्षेत्रीय स्तर पर नियमित निगरानी और फील्ड विजिट बढ़ाने के निर्देश दिए।

उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि केंद्र सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन, राष्ट्रीय गोकुल मिशन और कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में गति बढ़ाएं

तथा किसानों और पशुपालकों तक योजनाओं का लाभ सुनिश्चित रूप से पहुँचाया जाए। उन्होंने राज्य सरकार की नवाचारपरक पहल विशिष्ट सीमन बैंक और मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना की सराहना की।

डॉ. जोशी ने अधिकारियों से सीमन बैंक की तकनीकी व्यवस्था, गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली तथा नस्ल सुधार कार्यक्रमों की प्रगति के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले सीमन उत्पादन और वितरण पर विशेष ध्यान दें। अपर सचिव ने सीमन बैंक में कार्यरत वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों से संवाद करते हुए अनुसंधान और नवाचार को पशुधन विकास की दिशा में महत्वपूर्ण बताया।

पशुपालन व गोपालन विभाग के शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने राज्य में पशुपालन के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों और विभाग की प्रगति के बारे में अवगत करवाया। बैठक में केन्द्रीय पशुपालन निदेशालय के निदेशक श्री वी. जयचंद भानु रेड्डी व संयुक्त आयुक्त डॉ. भूषण त्यागी, आरसीडीएफ महाप्रबंधक श्रीमती श्रुति भारद्वाज, राज्य पशुपालन निदेशक राजस्थान डॉ. आनंद सेजरा, सूचना प्रौद्योगिकी तथा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ अधिकारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानों आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेक्टर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज



जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास 2
साईज - 16, 20 मिमी



जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
13, 14 मील (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी



नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटिंग में उपलब्ध

जैन ड्रिप
प्रति ड्रिप, फसल भरपूर!

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाइट: www.jains.com



सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!